सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 12/-
वार्षिक	₹ 120/-
विशेष वार्षिक	₹ 500/-
विदेशों में (वार्षिक)	30 यु.एस. डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

अप्रैल, 2013 वर्ष 12 अंक 02

रब के आदेश

रब के यह आदेश हैं सुन लो
सदा करो तुम न्याय
परोपकार हो कार्य तुम्हारा
सम्बन्धी का करो सहाय
व्यभिचार से दूर रहो तुम
करो न अप्रिय कार्य
अति कर्मों से सदा बचो तुम
करो न अत्याचार
रब के यह उपदेश ग्रहण कर
बन जाओ उपकारी
भूलो ना उपदेश कभी यह
हो तुम यदि गुणकारी

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी	3
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	4
सफलता	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	5
महिलाएं भी सावधानी बरतें	गुलज़ार सहराई	7
जगनायक	ह0 मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	9
नजात व कामयाबी	मौ0 सै0 मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी	11
हज़राते सहाबा रज़ि0 की अज़मत	मौ0 मुहम्मद ख़ालिद नदवी गाज़ीपुरी	12
मौ0 सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	16
इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर	नजमुस्साकिब अब्बासी नदवी	19
नग्नता और अश्लीलता के दुष्प्रभाव	इन्तिज़ार नईम	21
इस्लाम में उदारता की शिक्षा	मतीन तारिक बागपती	26
नैतिक पतन के लिए ज़िम्मेदार कौन	हनीफा बेग़म	28
ईश्वरीय शिक्षाओं से दूर होने का	मुशर्रफ अली	30
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी	33
प्रिय पाठकों की सेवा में		36
ईमान क्या है	शैख अब्दुल मजीद जंदानी	37
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	डॉ0 मुईद अशरफ नदवी	40

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी

सूर-ए-बक़रः

अनुवाद :-

क्या तुमको ये ख़्याल है कि जन्नत में चले जाओगे, हालाँकि तुम पर नहीं गुज़रे हालात उन लोगों जैसे, जो हो चुके तुमसे पहले कि पहुँची उनको सख़्ती और तकलीफ और झड़—झड़ाये गए, यहाँ तक कि कहने लगा रसूल और जो उसके साथ ईमान लाए कि कब आएगी अल्लाह की मदद, सुन रखो अल्लाह की मदद करीब है[1(214)]। तुमसे पूछते हैं कि क्या चीज़ खर्च करें[2], कह दो कि जो कुछ तुम खर्च करो माल तो माँ—बाप के लिए और क़रीबियों के और यतीमों के और मुहताजों के और मुसाफिरों के और जो कुछ करोगे तुम भलाई तो वह बेशक अल्लाह को मालूम है[3(215)]।

तफ्सीर (व्याख्या):-

1. पहले ज़िक्र किया जा चुका कि दुश्मनों के हाथ से नबियों और उनकी उम्मतों को हमेशा तकलीफें दी गईं तो अब मुसलमानों से कहा जा रहा है कि क्या तुमको इस बात की लालच है कि जन्नत में दाखिल हो जाओ, हालाँकि अगली उम्मतों को जो तकलीफ उठानी पड़ी वह तुम्हारे ऊपर नहीं आई कि उनको ग़रीबी व भुखमरी, बीमारी और खौफे कुफ्फार इस तरह आए कि मजबूर और आजिज़ होकर नबी और उनकी उम्मत बोल उठी कि देखिए अल्लाह ने जिस मदद का वादा किया था वह कब आएगी, यानी इन्सानी फितरत के मुताबिक परेशानी की हालत में मायूसी भरे जुम्ले निकलने लगे। इस पर रहमते इलाही मुतवज्जेह हुई और इरशाद हुआ कि होशियार हो जाओ, अल्लाह की मदद आएगी, घबराओ नहीं, तो ऐ मुसलमानो! दुनियावी तकलीफ और दुश्मन के भारीपन से घबराओ नहीं, सब्र करो और जमे रहो।

2. पिछली आयतों में ये मजमून बहुत ताकीद से बयान हुआ कि कुफ्र व निफाक़ (नकार व कपटाचार) छोड़ दो और इस्लाम में पूरी तरह दाखिल हो जाओ। अल्लाह के हुक्म के सामने किसी की न सुनो, अल्लाह की खुशी में जान व माल खर्च करो और हर तरह की शिद्दत और तकलीफ पर सब्र करो, अब यहां इसी सम्बन्धित बातों का विस्तार पूर्वक बयान होगा।

3. कई सहाबा जो मालदार थे, उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि माल में से क्या खर्च करें और किस पर खर्च करें, उस पर हुक्म हुआ कि कम हो या ज़्यादा जो कुछ हो अल्लाह के लिए खर्च करो व माँ—बाप करीबी रिश्तेदार और यतीम व मुहताज तथा मुसाफिरों के लिए है, यानी सवाब हासिल करने के लिए

शेष पृष्ठ................04 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

अन्धेरे में मस्जिद आने का सवाब

—अमतुल्लाह तस्नीम

हज़रत बुरीदा रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद ने फरमाया, जो अंधेरी रातों में मस्जिद आते हैं उनको क़यामत के दिन पूरे नूर की खुशखबरी दो।

(अबूदाऊद–तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, मैं तुम को ऐसा अमल न बता दूँ जिसकी वजह से अल्लाह ख़ताओं को मिटा देता है और दरजा बुलन्द करता है। लोगों ने कहा, हाँ! फरमाया, तकलीफ के वक्त पूरा–पूरा वुज़ू करो, मस्जिद की ओर कदमों की बढ़ोत्तरी और नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इन्तेज़ार सरहद की हिफ़ाज़त है, ये सरहद की हिफ़ाज़त है।

(मुस्लिम)

ईमान की निशानी–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जब तुम किसी आदमी को मस्जिद आते–जाते और उसकी ख़बर लेते देखो तो उसके ईमान की गवाही दो, इसलिए कि अल्लाह फरमाता है कि अल्लाह की मस्जिदों को वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़यामत के दिन पर यक़ीन रखते हैं। (तिर्मिज़ी)

नमाज़ का इन्तेज़ार–

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि आदमी जब तक मस्जिद में रहता है, नमाज़ में ही गिना जाता है। जब तक उसको नमाज़ ने रोके रखा हो और घर जाने के लिए बजुज़ नमाज़ के कोई चीज़ रोक न हो।

(बुख़री–मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ि0 कहते हैं कि एक बार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इशा की नमाज़ में इतनी देर लगाई की आधी रात हो गई। फिर नमाज़ पढ़ कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि लोग नमाज़ पढ़ कर सो गए और तुम जब तक नमाज़ का इन्तेज़ार करते रहे, नमाज़ की हालत में रहे (अर्थात नमाज़ का इन्तेज़ार नमाज़ में ही गिना जाएगा।

(बुख़ारी–मुस्लिम)

जमाअत की फ़ज़ीलत–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, जमाअत की नमाज़ का सवाब अकेले पढ़ने से सत्ताइस गुना ज़्यादा है। (बुख़ारी–मुस्लिम) ❑❑

कुर्आन की शिक्षा.....

खर्च करना चाहो तो जितना चाहो खर्च करो कोई निर्धारण और कैद नहीं, अल्बत्ता ये ज़रूरी है कि जिन अवसरों को हमने बताया है उनमें खर्च करो। ❑❑

सफलता

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

मनुष्य जन्म लेता है, एक समय तक वह माँ की गोद में पलता है, माँ का दूध पीता है, कभी किसी कारण माँ की छाती में दूध नहीं आता तो उसको ऊपर का दूध दिया जाता है। यह अवस्था उसकी इस्लामी नियमानुसार अधिक से अधिक दो वर्ष रहती है। दूसरे धर्म की स्त्रियाँ तीन–चार वर्ष तक दूध पिलाती रहती हैं। मैंने तो 9 वर्ष तक के लड़के को दूध पीते देखा है। दो वर्ष तक की आयु तक बच्चे को कोई कष्ट होता है तो वह रोता है, न अपनी पीड़ा बता सकता है और न उससे बचने की उसमें शक्ति होती है। कुछ बच्चे इस अवधि में हृष्टपुष्ट और बड़े प्रसन्न देखे जाते हैं। यह उसके बचपन के पहले चरण की सफ़लता कही जायेगी, जो उनके माँ–बाप की सफलता से भी जोड़ी जा सकती है। रोगी शिशुओं को उनके माता–पिता इलाज कराके स्वस्थ बनाने की चेष्ठा करते हैं और बहुधा वह स्वस्थ हो जाते हैं, यह भी बच्चा और उनके माता–पिता की सफलता है। कुछ रोगी बच्चे चिकित्सा से भी स्वस्थ नहीं हो पाते या उनके माँ–बाप अपनी किसी विवशता के कारण अपने बच्चों का इलाज नहीं कर पाते। बच्चा माँ का दूध पीना छोड़ता है, बढ़ता है, पलता है, उसको अच्छा खान–पान मिलता है, अच्छा स्वास्थ्य मिलता है, खेलता है, कूदता है, प्रसन्न रहता है, यहाँ तक कि किसी मदरसे या पाठ शाला में प्रवेश लेता है। यह उसके बचपन के दूसरे चरण की सफलता है। स्कूल में बच्चा कई वर्षों तक शिक्षा प्राप्त करता हुआ वह हाई स्कूल, इण्टर पास करता है, यह उसके बचपन के तीसरे चरण की सफलता है।

अब उसे आगे पढ़ने की सुविधा मिलती है, कभी वह अच्छा खिलाड़ी बन कर करोड़ों कमाता है ,कभी टीचर, इंजीनियर, डॉक्टर बन कर सुखी जीवन बिताता है, कभी किसी कला में कुशलता प्राप्त करके अपनी और देश की सेवा करता है, कभी व्यापार आदि में अपना स्थान बनाता है। इस अवस्था में पहुँच कर फिर शादी करता है, बीबी बच्चों के साथ सुखी जीवन बिताता है, बच्चे पैदा होते हैं उनका भलीभाँति पालन–पोषण कर उनको शिक्षित तथा अपनी ही भांति सफल जीवन प्राप्त करने वाला बनाता है। निः सन्देह ऐसे मनुष्य सफलता पाने वाले माने जाते हैं।

कभी इसके विपरीत भी होता है, कभी किसी कारण वश मनुष्य बचपन से बुढ़ापे तक रोगी रहता है, कभी चिकित्सा की सुविधाएं नहीं मिलतीं, कभी सुविधाएं मिलती हैं तो रोग ऐसा होता है कि ठीक नहीं होता।

कभी स्वास्थ्य तो मिलता है परन्तु गरीबी के कारण खान–पान अच्छा नहीं मिलता। न शिक्षा, न अच्छी नौकरी, बस धनवानों तथा उच्च पदों वालों की सेवा में उसका

जीवन व्यतीत हो जाता है। ऐसे मनुष्यों के विषय में समझा जाता है कि यह मानव की असफलता है। और बड़ा दुख उस समय होता है जब ऐसे मनुष्यों को गरीबी से उबारने की सरकार कोई योजना बनाती है तो सफल जीवन बिताने वालों में कुछ की बन आती है, वह योजनाओं में व्यय होने वाले धन में चालाकी से अपना भाग लगा लेते हैं।

चाहे किसी ने सम्पन्न तथा आनन्दमय जीवन पाया हो या निर्धन तथा कष्ट भरा जीवन पाया हो, चाहे उसको अल्प आयु मिली हो, चाहे लम्बी आयु मिली हो, चाहे कोई राजा रहा हो, चाहे प्रजा, इस संसार में जन्म लेने वाले को एक दिन मौत अवश्य आएगी और उस का यह जीवन समाप्त हो जाएगा। अब यदि मरने के पश्चात कोई और जीवन न हो तो निः सन्देह यहाँ सम्पन्न जीवन मिलने वाला सफल रहा और गरीबी तथा कष्ट युक्त जीवन मिलने वाला असफल रहा, परन्तु यदि मरने के पश्चात कोई और जीवन आरंभ होने वाला है तो उस जीवन में यदि सुख है तो कहा जाएगा कि सफलता मिली, परन्तु यदि उस जीवन में दुख है तो मनुष्य असफल रहा।

इस्लाम बताता है कि इस संसार में मनुष्य केवल एक बार जीवन पाता है। इस जीवन के समाप्त होने पर दूसरा जीवन आरंभ होता है। एक लम्बे समय तक क़ब्र का जीवन रहता है, क़ब्र से तात्पर्य वह गड्ढा नहीं जिस में मृतक गाड़ दिया जाता है, यहाँ तो कोई जला दिया जाता है, तो कोई पानी में बहा दिया जाता है जिसको पानी के जीव–जन्तु खा लेते हैं, अपितु क़ब्र से तात्पर्य वह स्थान है जहाँ मृतक मनुष्य की आत्मा रखी जाती है, वहाँ आत्मा अपने कर्मानुसार सुख में रहती है या दुख में। फिर जब दूसरे सूर (नृसिया) की ध्वनि होगी तो सब जीव जी उठेंगे और क़ियामत का मैदान होगा। वहां कर्मों का लेखा–जोखा होगा, फिर कर्मानुसार कोई जहन्नम में जाएगा और किसी को पुरस्कार के तौर पर जन्नत मिलेगी।

अतः वह मानव सफल है जो क़ब्र के जीवन में दुख से बचा दिया जाए और कियामत में उस को जहन्नम से बचा कर जन्नत में निवास दिया जाये और अल्लाह उससे राजी हो जाए। मानव की वास्तविक सफलता यही है, इस सफलता को प्राप्त करने के लिए मानव को यह मानना पड़ेगा कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के अन्तिम सन्देष्टा हैं। फिर पूरा जीवन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिक्षाओं के अनुसार बिताना होगा, यहां तक कि मौत इस परिस्थिति में आए कि मरने वाला उक्त विश्वास पर हो।

इस्लाम सन्यास की शिक्षा नहीं देता, बस उसने जीवन यापन के सिद्धान्त बताएं हैं, मनुष्य उन सिद्धान्तों का पालन करते हुए जीवन बिता कर वास्तविक सफलता प्राप्त करे।

शेष पृष्ठ..... 08 पर

बलात्कार की घटनाएं

महिलाएं भी सावधानी बरतें

—गुलज़ार सहराई

राजधानी दिल्ली में पिछले दिनों मेडिकल कॉलेज की एक छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार की घटना ने भले ही जनाक्रोश को भड़का दिया हो, यहां तक कि बलात्कारी के लिए मृत्युदण्ड की मांग की जाने लगी हो, परन्तु हालात बता रहे हैं कि अपराधियों के पकड़े जाने के बावजूद न तो इस प्रवृत्ति के लोगों के हौसले पस्त हुए हैं और न इस हृदय विदारक घटना का कुछ प्रभाव नारी स्वतंत्रता की पक्षधर आधुनिक महिलाओं की दिनचर्या पर ही पड़ा है।

इस तथ्य का अनुमान निम्नलिखित कुछ घटनाओं से सहज ही लगाया जा सकता है जो उपर्युक्त घटना के ठीक बाद ही घटी है।

पहली घटना तमिलनाडु के कोडालुर ज़िले में कॉलेज के एक छात्र द्वारा अपने दस साथियों सहित एक युवती के साथ कथित बलात्कार की है। यह घटना 24 दिसम्बर की रात मणिमुक्ता नदी के तट पर घटित हुई। गुरु मंगलम गांव की यह युवती घटना के समय अपने एक 'संबंधी' के साथ नदी के तट पर बातें कर रही थी कि दस व्यक्तियों का एक ग्रुप वहां पहुंच गया। ग्रुप ने पहले लड़के की पिटाई की और फिर उससे रूपये तथा अन्य क़ीमती सामान छीनकर उसे बांध दिया। उसके बाद लड़की को अपनी वासना का शिकार बनाया।

दूसरी घटना पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता के एक बस डिपो की है जहां एक 40 वर्षीय महिला बलात्कार का शिकार होने से बाल–बाल बच गयी। ख़बर के अनुसार यह महिला एक डिपो में खड़ी (ख़ाली) बस में जा कर बैठ गयी और बस चलने की प्रतीक्षा करने लगी। थोड़ी देर में एक व्यक्ति ने बस में दाख़िल हो कर उससे बलात्कार का प्रयास किया, परन्तु कुछ स्थानीय लोगों ने उस व्यक्ति को क़ाबू में करके पुलिस के हवाले कर दिया। परन्तु पुलिस की लापरवाही के कारण (या फिर पुलिस को पैसे देकर) अभियुक्त फ़रार होने में सफल हो गया और सूचना मिलने तक पकड़ा नहीं जा सका था।

तीसरी घटना पुन्दरगढ़ जिले के कटरा पुलिस थाने से संबंध रखती है, जहाँ लेतीबीड़ा गांव के पांच युवकों को एक युवती के साथ बलात्कार के आरोप में पुलिस ने गिरफ़्तार किया है। सूचना के अनुसार अभियुक्तों ने 25 दिसम्बर की रात उस समय लड़की के साथ बलात्कार किया जब वह क्रिसमस की पार्टी में भाग लेने के बाद अकेली घर लौट रही थी।

ये तीनों घटनाएं अलग–अलग स्थानों पर घटित हुई हैं, फिर भी तीनों में एक बात समान

रूप से पायी जाती है और वह है अपनी अस्मिता के प्रति इन स्त्रियों का असावधानीपूर्ण रवैया। पहली घटना तमिलनाडु में एक नदी के किनारे घटित हुई जहां एक युवती रात के अंधेरे और एकांत में एक युवक के साथ बातों में मग्न थी, वह युवती का कौन था, ख़बर में इसे स्पष्ट नहीं किया गया, मगर चूंकि वह पति नहीं था इसलिए अनिवार्यतः वह उसका प्रेमी रहा होगा। रात के एकांत में नदी के किनारे अपने 'प्रेमी' के साथ समय गुज़ारने की मूर्खता (जिसे निश्चय ही वह युवती अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता कहती होगी) उसे कितनी महंगी पड़ेगी उसने सोचा भी न होगा। लेकिन क्या वास्तव में जो कुछ उसके साथ घटा, वह अप्रत्याशित था?

कोलकाता के बस डिपो की एक ख़ाली बस में अकेली बैठकर बस चलने का इन्तिज़ार करना भी असावधानीपूर्ण कार्य ही कहा जा सकता है। कुछ ऐसी ही मूर्खता सुन्दरगढ़ की उस ईसाई युवती ने भी की जो क्रिसमस की पार्टी मनाने के बाद देर रात को अकेली घर लौट रही थी और आख़िरकार उसी मूर्खता (जिसे वह निश्चय ही अपनी 'बोल्डनेस' कहती होगी) के परिणामस्वरूप बन गयी।

बलात्कार की घटनाओं में इन असावधानियों का बड़ा दख़ल होता है परन्तु विडंबना तो यह है कि महिलाओं के मान–सम्मान और उनकी अस्मिता की रक्षा के लिए आवाज़ उठाने वाले भी समस्या के इस पहलू पर विचार नहीं करते। वे केवल अपराधियों को कठोर दंड दिये जाने की मांग करते हैं जैसा कि दिल्ली की घटना के संदर्भ में बलात्कारी को मृत्युदंड दिये जाने की मांग की जा रही है, यहां तक कि इस संदर्भ में इस्लामी सज़ाओं का भी हवाला दिया जा रहा है। लेकिन यह हवाला भी केवल भावुकता में दिया जा रहा है। इसी लिए इस तरह इस्लाम का हवाला देने वाले इस हक़ीक़त को नज़रअंदाज़ कर रहे हैं कि किसी भी अपराध की कठोरतम सज़ा निर्धारित करने से पहले इस्लाम ऐसा वातावरण बनाने पर ज़ोर देता है जहां वह अपराध करना ही मुश्किल हो जाए और अत्यंत दुष्ट ही उस अपराध का दुस्साहस कर सकें।

(क्रान्ति साप्ताहिक फरवरी 3 से ग्रहीत)

❖❖❖

सफलता .....

इस्लाम सांसारिक उन्नति के कामों में कदापि बाधक नहीं, आप विज्ञान में तथा दूसरी कलाओं में कुशलता प्राप्त करें। व्यापार से, नौकरी से चाहे जितना धन कमाएं, बस धन अवैध ढंग से न कमाएं। धन कमा कर धन का हक़ (ज़कात, खैरात) अदा करें। मानव सेवा करें, आनन्द मय जीवन बिताएं, परन्तु किसी को कष्ट न दें, किसी का हक़ न मारें। इस्लामिक शिक्षाओं के अनुसार जीवन बिताएं, अल्लाह आपकी और हमारी मदद करे, यही मानव जाति की वास्तविक सफलता है।

❖❖❖

जगनायक

—हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —अनु0 मुहम्मद गुफ़रान नदवी

बनी कुरैज़ा का मामला-

मदीने की आबादी में अरबों के कबायल में "औस" व "खज़रज" बड़े और शहर पर हावी कबीले थे। वह इस्लाम के दायरे में दाखिल हो कर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की रहनुमाई में मुत्तहिद (संयुक्त) हो गए थे। अरबों के अलावा यहूदियों के तीन बड़े कबीले, बनू कुरैज़ा, बनू नज़ीर, बनू क़ैनका थे। उनसे शुरु ही में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआहिदा (समझौता) कर लिया था कि एक दूसरे के मफादात (हितों) को नुकसान न पहुंचाएंगे और बाहर के दुश्मन के हमले की सूरत में एक दूसरे की मदद करेंगे। लेकिन उन क़बाएल ने अलग —अलग मौक़ों पर ऐसी बदअहदी इख़्तियार की कि मुसलमानों को सख़्त नुकसान पहुंचा। चुनांचे हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ऐसे तमाम मौकों पर कार्यवाई करनी पड़ी। बनू नज़ीर ने जब बदअहदी की तो वह शहर से निकाले गये, उनकी बदअहदी को देखते हुए आपने बनू कुरैज़ा कबीले से मुअहिदे को नए सिरे से पक्का किया और वादा लिया कि जंग में एक दूसरे की मदद करना ज़रूरी होगा, मदीने पर हमला हुआ तो मुशतरका (संयुक्त) तौर पर मुकाबला होगा।

लेकिन इस क़बीले के सरदार हय्यू बिन अख़्तर ने यहूदियों को वरगला कर (बहका कर) और उन्हें आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खिलाफ भड़का कर उस अहदनामे की पामाली और कुरैश से इत्तेहाद और दोस्ती पर अमादा कर लिया। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस समझौते को खत्म करने की इत्तिला मिली तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अरब कबीले "औस" के सरदार साद बिन मआज़ और कबीले "खज़रज" के सरदार साद बिन उबादा और कुछ अन्सार को इस वाकिये की तहक़ीक़ के लिए रवाना किया। वहां जा कर उन्होंने पता लगाया तो जितना सुना था उससे ज़्यादा खतरनाक बदअहदी की सूरतेहाल पायी, ज़ाएद बात यह कि तहक़ीक़ के मौके पर उस क़बीले के लागों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिए नामुनासिब और असभ्य अल्फाज़ इस्तेमाल किये और खराब लहजे में कहने लगे कि कैसा अल्लाह का रसूल? हमारे और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बीच कोई अहद व मुआहिदा नहीं[1]।

बनू कुरैज़ा की शरारत और बदअहदी जब सामने आई तो महसूस हुआ कि आईन्दा उनसे संगीन खतरा पेश आ सकता है इसलिए उनकी सरकोबी ज़रूरी है, लिहाज़ा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जंग से फ़ारिग़ होकर हुक्म दिया कि

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/223

अभी लोग हथियार न खोलें और बनू कुरैज़ा का रुख़ करें, मैं भी वहां का इरादा कर रहा हूँ कि उनकी रोकथाम कर दूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू कुरैज़ा में पहुँच कर उनकी घेरा बन्दी कर दी जिसका सिलसिला 25 दिन व रात जारी रहा। यहां तक कि वह इस घेरे से तंग आ गए, अल्लाह तआला ने उनके दिलों में रोब डाल दिया।

इस दरमियान में बनू कुरैज़ा ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह पैग़ाम भेजा कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास उमर बिन औफ को भेज दीजिए। (यह लोग औस के हलीफ भी थे), ताकि हम उनसे अपने मामले में मशविरा कर सकें। उनकी दरख़्वास्त पर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अबू लुबाबा रज़ि0 को वहां भेज दिया, उनको देखते ही सब लोग अदब के साथ खड़े हो गए औरतें और बच्चे दहाड़ें मार कर रोने लगे, यह देख कर उनका दिल कुछ पसीज गया, उसके बाद यह सब लोग कहने लगे अबू लुबाबा! क्या मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फैसले पर सर झुका दिया जाये? उन्होंने कहा हाँ, इस के साथ अपने गले पर हाथ फेर कर उसकी तरफ इशारा किया। अबू लुबाबा रज़ि0 कहते हैं कि अभी मेरे कदम वहां से नहीं हटे थे कि मुझे यह महसूस हुआ कि मैंने अल्लाह और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खियानत की है, चुनांचे वह फौरन उलटे पांव वापस हुए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर होने के बजाए मस्जिद नबवी के एक सुतून से अपने को बाँध दिया और ऐलान कर दिया कि मैं उस वक्त तक इस जगह से न हटूँगा जब तक अल्लाह तआला मेरे कुसूर को माफ न फरमा देगा, उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की खियानत की थी। जब अल्लाह तआला ने उनकी तौबा कुबूल फरमाई और यह आयत नाज़िल हुई:—

"और कुछ लोग हैं जो अपने गुनाहों का (साफ) इक़रार करते हैं, उन्होंने अच्छे और बुरे अमलों को मिला—जुला दिया था, क़रीब है खुदा उन पर मेहरबानी से तवज्जुह फरमाए, बेशक खुदा बख़्शने वाला मेहरबान है"।

(सूरा तौबा:102)

तो फौरन लोग उनको खोलने के लिए तेज़ी से आगे बढ़े उन्होंने कहा नहीं, खुदा की क़सम! जब तक हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने मुबारक हाथों से आज़ाद नहीं करेंगे मैं उसी हालत में रहूँगा। जब नमाज़े फ़ज्र के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तशरीफ लाए और उनके करीब से गुज़रे तो उनको खोला, यह खजूर के उस तने से तकरीबन 20 रात बँधे रहे। हर नमाज के वक्त उनकी बीवी आतीं और नमाज़ के लिए उनको खोल देतीं, फिर वह दुबारा अपने आपको उससे बांध लेते[1]।

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/236

शेष पृष्ठ.....35 पर

—देवनागरी लिपि में उर्दू

नजात व कामयाबी सिर्फ राहे पैगम्बर में

—मौलाना सैय्यद मुहम्मद हमज़ा हसनी नदवी

आज दुनिया की सारी रियासतें और हुकूमतें इसी काम में लगी हुई हैं कि कौमों और इन्सानी गिरोहों को हर तरह मुतमइन किया जाये और ख़्वाहिशाते इन्सानी की तक्मील की जाये। लेकिन क्या है कि एक इन्सान की ख़्वाहिशात का कभी पूरा होना नामुमकिन है। वाकिआ़त की दुनिया में देखिए तो इस दुनिया में एक आदमी की भी मुँह मांगी ख़्वाहिशात को पूरा करने की गुंजाइश नहीं है।

यहाँ किसी हवस वाले की हवस पूरी नहीं हो सकती। आज दुनिया के बड़े—बड़े रहनुमा कह रहे हैं कि इन्सानी ख़्वाहिशात सब जाइज़ और फितरी हैं, सब को पूरा होना चाहिए और इसी पर दुनिया में अ़मल हो रहा है, यही बुनियादी ग़लती है। ख़्वाहिशात की तस्कीन और तक्मील से इन्सानियत की तशफ्फी नहीं हो सकती और न क़ल्ब में सुकून पैदा होगा। और यह दुनिया तो समन्दर का खारा पानी है, जिस कदर इस से प्यास बुझायेगा प्यास भड़केगी। मगर आज सारी दुनिया में इसी फलसफे के मुताबिक काम हो रहा है। इन्सानों की सही व ग़लत हर किस्म की ख़्वाहिशात पूरी की जाने की कोशिश की जा रही है और लोग समझते हैं कि इससे सूकून पैदा होगा, अम्न व अमान काइम होगा, लेकिन नतीजा बिल्कुल उल्टा निकल रहा है। आज हर तरफ आग लगी हुई है और उसमें ईंधन डाला जा रहा है। ख़्वाहिशात व मुतालबात का अलाव जल रहा है और इस आग में सब कुछ जल कर भस्म हुआ जा रहा है।

अल्लाह के रसूलों का रास्ता इससे बिल्कुल अलग है। उन्होंने जाइज़ और नाजाइज़ ख़्वाहिशात की तक्मील के बजाय ख़्वाहिशात को लगाम दी, उस के रुख को मोड़ा। सिर्फ जाइज़ ख़्वाहिशात को उसका मुस्तहक़ समझा कि उनकी तक्मील की जाये। उन्होंने जिन्दा और बेदार ज़मीर पैदा किया, इससे ज़िन्दगी में एतिदाल पैदा हुआ, दिलों में सुकून आया। अल्लाह तआला के पैगम्बरों ने नफ़्सानी ख़्वाहिशात के बजाए अल्लाह को राजी करने की ज़बरदस्त ख़्वाहिश पैदा की, इन्सानी हमदर्दी, गमगुसारी का जज़्बा पैदा किया, उन्होंने ज़मीर बख़्शा और यक़ीन बख़्शा।

हम को लोगों में यही जज़्बा पैदा करना चाहिए और इस हक़ीकत को समझना चाहिए कि ज़िन्दगी महज़ खाने—पीने का नाम नहीं है। इन्सानी ज़िन्दगी महज हैवानी ज़िन्दगी नहीं है बल्कि एक बा मकसद ज़िन्दगी है। इन्सान की दुनिया सिर्फ पेट की दुनिया नहीं है। आज अस्ल ज़िन्दगी दम तोड़ रही है, इन्सानियत की पूँजी लुट रही है, उसको सिर्फ़ पैग़म्बरों की सदा ही बचा सकती है। पैगम्बरों का बताया हुआ रास्ता ही नजात और कामयाबी दिला सकता है।

शेष पृष्ठ..... 35 पर

हज़रते सहाबा रज़ि० की अज़मत (श्रेष्ठता) और उनकी सामयिक अनबनों में हमारा सम्मानपूर्ण दृष्टिकोण

—मौ0 मुहम्मद ख़ालिद नदवी ग़ाज़ीपुरी

अल्लाह तआला ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अपना आखिरी नबी बनाया, आपको सब नबियों का सरदार बनाया, आपको जो शरीअ़त (विधान) दी वह हर प्रकार से परिपूर्ण है तथा जगत की समस्त मानव जाति के लिए है, और रहती दुनिया तक दुनिया के हर वर्ग के लिए पर्याप्त है। इस शरीअत को भली भाँति ग्रहण करने, फिर उसका अनुकरण करने, उसका प्रसारण करने, उसको अपने बाद आने वालों तक पूरी अमानतदारी के साथ पहुंचाने के लिए जिस ज़माअत को अल्लाह तआला ने चुना उस जमाअत को सहाबा कहा जाता है। अल्लाह उन से राज़ी हुआ और वह अपने रब से राजी हुए, और अल्लाह के महबूब (प्रिय) नबी के महबूब हुएँ। क्यों न होता वह अल्लाह तआला की चुनी हुई जमाअत तथा उनके सर्व श्रेष्ठ रसूल द्वारा तरबियत याफ्ता थे। अल्लाह ने अपनी किताब में जगह–जगह उन का उल्लेख प्रशंसा के साथ किया है, कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

अनुवादः मुहाजिरीन व अन्सार में से वह लोग जिन्होंने इस्लाम कबूल करने में पहल की और वह लोग जिन्होंने भलाई के साथ उनका अनुसरण किया अल्लाह उनसे राज़ी हुआ वह अल्लाह से राज़ी हुए, और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी वह उनमें हमेशा –हमेशा रहेंगे, यह बड़ी कामयाबी है।

(सूर–ए–तौबा 1:100)

अनुवादः वही सच्चे मोमिन हैं उनके लिए मगफिरत और बेहतरीन रिज़्क है।

(सूर–ए–अन्फालः 74)

अनुवादः अल्लाह ने तुम्हारे (सहाबा) लिए ईमान को महबूब बना दिया है और तुम्हारे दिलों में उसकी जीनत व खूबी दिखा दी है और तुम्हारे लिए कुफ्र और नाफरमानी और गुनाह को दूषित बना दिया है, यही लोग सीधे मार्ग पर हैं। यह अल्लाह का फज़्ल और उसकी नेअ़मत है और अल्लाह बड़ा जानने वाला, बड़ी हिक्मतों वाला है। (हुजरात : 78)। अगर यह लोग (गैर मुस्लिम) उसी तरह ईमान ले आएं जिस तरह तुम (सहाबा) ईमान लाए हो तो उन्हें हिदायत मिल जाएगी। (अल बकरहः137)

इसी तरह दूसरी जगह कलामे पाक में कहा गया "आप उनको रुकू करते और सज्दा करते देखते हैं, कभी उनको खैरे उम्मत या उम्मते वसत की उपाधि से याद किया गया, कभी कहा गया कि उन सब से हुस्ना (भलाई) का वादा किया गया" अर्थात

तमाम मुहाजिरीन व अन्सार से जन्नत का वादा किया गया। कभी वादा किया गया कि नबी और उनके अस्हाब को महशर की जिल्लत और रुस्वाई से महफूज़ रखा जाएगा। सुल्हे हुदैबिया के मौके पर मौजूद सहाब–ए–किराम से नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि "तुम आज इस ज़मीन पर सबसे बेहतर इन्सान हो"।

अनगिनत पवित्र हदीसों में सहाबा की प्रशंसा बयान हुई है, जो उनके उत्तम पुरुष होने पर दलील (तर्क) हैं। सहाबा की मुहब्बत पहचान है रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मुहब्बत की, उनकी शान में ज़रा भी तौहीन (अपमान) क्षमा रहित पाप है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : अनुवाद "अल्लाह से डरो, अल्लाह से डरो मेरे सहाबा के बारे में, मेरे बाद उनको तन्कीद का निशाना न बनाना, क्योंकि जिसने उनसे मुहब्बत की उसने मुझसे मुहब्बत की और जिसने उनसे बुग्ज़ (द्वेष) रखा उसने मुझसे बुग्ज़ रखा और जिसने उनको कष्ट दिया उसने मुझको कष्ट दिया और जिसने मुझको कष्ट दिया उसने अल्लाह को कष्ट दिया, (अर्थात अल्लाह को नाराज़ किया) और जिसने अल्लाह को कष्ट दिया क़रीब है कि अल्लाह उसको पकड़ ले। (तिर्मिज़ी)

एक दूसरी रिवायत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं, अनुवादः मेरे अस्हाब को बुरा न कहो, तुममें से अगर कोई शख़्स उहद पहाड़ के बराबर भी सोना खैरात करदे तो मेरे सहाबा के एक मुस्त जौ खैरात करने के सवाब के बराबर भी नहीं पहुंच सकता, बल्कि उनके सवाब के सौवें हिस्से को भी नहीं पहुंच सकता। (बुख़ारी)

एक हदीस में हैः– जब तुम ऐसे लोगों को देखो जो मेरे अस्हाब को बुरा कहते हैं और उनको तन्क़ीद (आलोचना) का निशाना बनाते हैं तो तुम उनसे कहो, तुममें से जो बुरा हो उस पर अल्लाह की लानत। (तिर्मिज़ी)

इस जमाअत का हर फर्द (व्यक्ति) आफ़ताब व माहताब है। "मेरे अस्हाब सितारों की तरह हैं उनमें से जिसकी पैरवी करोगे हिदायत पाओगे"। (मिश्कात)

"मेरे सहाबा का इकराम (सम्मान) करो, वह तुम (उम्मत) में सबसे बेहतर हैं। (मिश्कात)

उनकी सामयिक अनबनों में बीच की राह–

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा का स्थान समस्त मानव जाति में अल्लाह के नबियों के पश्चात सबसे ऊँचा है। हज़रत मौलाना अली मियाँ नदवी रह0 लिखते हैं "इन्सानियत के मुरक़्क़अ़ में, बल्कि इस पूरी कायनात में पैग़म्बरों को छोड़ कर इससे ज़्यादा हसीन व जमील, इससे ज़्यादा दिल कश और दिल आवेज़ तस्वीर नहीं मिलती जो सहाबा की ज़िन्दगी में नज़र आती है, सहाब–ए–किराम की जमाअत एक ऐसा इन्सानी मजमूआ़ है जिसमें नुबूवत के एजाज़ ने मुतजाद इन्सानी कमालात

पैदा कर दिये थे, उनका मुआशरा जिस की बुनियाद सुहबते नबी, तरबीयते ईमानी और तालीमाते कुर्आनी पर थी, एक बेख़ार इन्सानी गुलदस्ता था जिसमें हर फूल उसके लिए बाइसे ज़ीनत था।

इसमें कोई शक नहीं कि सहाब–ए–किराम उन तमाम अज़मतों, इताअ़तों और कुरबानियों से आरास्ता और सिफाते आलिया व औसाफ़े हमीद से मुत्तफिक व मुतय्यन होने के बावजूद बशरी तकाज़ों से खाली व आरी नहीं थे और ना माफौकुल फितरत खूबियों के मालिक इन्सान थे, इस लिए उनमें आपसी मुशाजरात (अनबनों) और इख़्तिलाफ़ात भी हुए। कशाकश और इन्तिशार की सूरतें भी पेश आईं। इन्सानी गलतियों का भी सुदूर हुआ। उन्होंने एक दूसरे की तरदीद भी की। हज़रत आइशा रज़ि0 ने कई सहाब–ए–किराम की आश पर अमली इस्तिदराक भी किया। हज़रत अली रज़ि0 को कई मुआमलात में इख़्तिलाफ़ रहा। हजरत अबू बक्र रज़ि0 को बाज़ों से तक्लीफ़ पहुंची। अज़वाजे मुतहरात में बाज़ ने बाज को कुछ कह दिया। ऐसे तल्ख़ व शीरीं लम्हात उनकी ज़िन्दगी में बकसरत पाये जाते हैं। लेकिन काबिले ज़िक्र बात यह है कि उनका इख़्लास व लिल्लाहियत बेनज़ीर, नबवी तरबीयत, उन की कीमिया असर सुहबत, उनकी दयानत दारी व वफादारी, इस्तिक़ामत व अमानतदारी का असर था कि उनके आपसी इख़्तिलाफ़ात व मुशाजरात ने उनके बाहमी तअल्लुकात पर न कोई असर पड़ने दिया और न हुदूदे शरीअत को पामाल होने दिया, न उनकी ज़ाती अना को दीनी उसूलों पर तरजीह देने दिया और न उन्हें इन्फ़िरादी पसन्द की चौखट पर इजतिमाई मुफाद को कुरबान करने की इजाजत दी और न मुस्तहब व मुबाह अमल में उनके इख़्तिलाफ़ की वजह से उम्मत के इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ में दराड़ पड़ने दिया, न उन्हें दीन की फुरूआत में अपनी राय पर इसरार और दूसरे को उस पर मजबूर करने दिया। खुलास–ए–कलाम यह कि वह अपने आपसी इख़्तिलाफ़ात व मुशाजरात में भी न राहे एअ़तिदाल से हटे और न बेजा इसरार के साथ अपनी राय पर डटे।

मुशाजरात के सिलसिले में गुफ़्तुगू करने से पहले यह बात जेहन में रहनी चाहिए कि सहाब–ए–किराम के माबैन इख़्तिलाफात इजतिहादी नोईयत के थे, इसी वजह से उलमा–ए–उम्मत ने निजाअ़, इख़्तिलाफ का नाम नहीं दिया बल्कि उनको मुशाजरात से अदा किया है क्योंकि यह शजर (दरख़्त) से मुशतक है और दरख़्त की शाख़ों का एक दूसरे से मिलने उसकी खूबसूरती को वाज़ेह करता है। सहाब–ए–किराम का इजतिहाद, हदीस व कुर्आन के दलाइल की रौशनी में था और हदीस में आया है कि मुजतहिद जब इजतिहाद करता है और उसकी राय सही होती है तो उसको दोहरा अज्र मिलता है और अगर उसकी राय खता पर

मबनी होती है तो उसको एक अज्र मिलता है।

ग़ज़व–ए–बनी कुरैज़ा के मौके पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "तुम में से कोई अस्र की नमाज़ बनी कुरैज़ा पहुंचने से पहले न पढ़े"। इस हदीस के सिलसिले में सहाबा के माबैन दो रायें हो गईं, बाज़ ने कहा कि नमाज़े अस्र बनी कुरैज़ा ही में पढ़नी है, अगर्चि उस का वक्त निकल जाए और बाज़ ने कहा नहीं, इस जुम्ले का मतलब बहुत जल्द कुरैज़ा के इलाके में पहुंचना है, नमाज़ वक्त ही के अन्दर अदा की जाएगी। अपने–अपने इजतिहाद के मुताबिक सहाब–ए–किराम ने अमल किया। एक जमाअत ने दूसरे की तकफीर व तफ़्सीक़ का बीड़ा नहीं उठाया। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मालूम हुआ तो आपने कोई नकीर नहीं फरमाई।

हजरत अली और हजरत मुआविया के माबैन जो इख़्तिलाफात थे वह इजतिहादी नौईयत के थे। दोनों की इस मसअले में अपनी मुनफरिद राय थी, पूरा मुआशरा दो घड़ों में मुनक़सिम था। अगयार ने भी इस मौके का फायदा उठाना चाहा। रूमी हुक्मरां ने हजरत मुआविया को कुछ तरगीबी खुतूत लिखे, ऐसे मौके पर हजरत मुआविया के तारीख़ साज़ जुम्ले ने मुशाजरात और इख़्तिलाफात के बावजूद एअ़तिदाल की एक नई तरह डाल दी। वह फरमाने लगे कि अगर तुमने हमारे ऊपर निगाहे बद डाली तो याद रखना कि मैं हजरत अली की फौज का अदना सिपाही हूँगा।

तबक़ाते इब्नि सअ़द में है कि हजरत अब्दुल्लाह बिन उमर उन हज़रात में से हैं जो मुशाजरात के ज़माने में किसी फ़रीक़ की मुवाफ़िक़त या मुखालिफत से यकसू रहे। हजरत उस्मान की शहादत के बाद उन से दरख़्वास्त की गई कि आप मैदान में आइए, हम आप के हाथ पर लोगों से बैअ़त लेंगे, लेकिन आपने बाहमी खाना जंगी के ख़तरे से इनकार फरमाया। आपको धमकियाँ भी दी गईं लेकिन आप अपने मौक़िफ़ पर काइम रहे, एक मरतबा मुशाजरत के दौरान लोगों ने आपसे कहा कि आप खिलाफत संभाल लीजिए सब लोग आपकी खिलाफ़त से राज़ी हो जाएंगे। आपने फरमाया कि अगर मशरिक़ के किसी शख़्स ने मुख़ालफ़त की तो क्या होगा? लोगों ने कहा कि ऐसा शख़्स मार डाला जाएगा और पूरी उम्मत की बेहतरी के लिए एक शख़्स का क़त्ल क्या हैसियत रखता है? आपने फरमाया कि खुदा की कसम! अगर सारी उम्मत में नेज़े का क़ब्ज़ा हो और मेरे हाथ में उसकी अन्नी हो तब भी मैं सारी दुनिया और जो उसमें है उसके बदले किसी मुसलमान का क़त्ल पसन्द नहीं कर सकता।

अल्लामा इब्नुल जौज़ी ने सिफतुस्सफ्वा में हज़रत मुआविया का यह वाकिआ ज़िक्र किया है कि एक मरतबा उन्होंने ज़रार बिन जुमरा से कहा कि अली का कुछ हाल बयान करो, उन्होंने कहा कि खुदा की क़सम! वह बहुत बुलन्द निगाह और क़वी व तवाना थे

शेष पृष्ठ.....25 पर

मौलाना सैय्यद अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह0

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीकी

सन् 1957 ई0 के किसी महीने में मौलाना अबुल इरफान नददी (काइम मुकाम मुहतमिम दारुल उलूम नदवतुल उलमा) रहमतुल्लाह अलैह के एक खत के ज़रीए बुलाने पर हाजिर होकर तब्लीगी मरकज़ लखनऊ के मकतब में छोटे बच्चों को पढ़ाना शुरुअ़ किया, शाम के वक्त टहलते हुए हसनी फार्मेसी की तरफ से गुज़र हुआ। देखा एक बुजुर्ग बहुत ही गोरे–चिट्टे, भरा बदन, सफेद भरी हुई दाढ़ी, बड़े अच्छे लिबास में खामोश बैठे हैं। मुझे ऐसा लगा कि यह इन्सान नहीं शायद फरिश्ता हैं। रोब ऐसा कि बात करना तो छोड़ो सलाम करने की भी हिम्मत न हुई। सामने से हट कर आड़ से झांकता रहा। एक साहब आए और उनको सलाम किया, बडी नर्म आवाज़ में सलाम का जवाब दिया, वह कुछ कहने लगे, लगा कि अपना कोई मर्ज़ बता रहे हैं, अब जो बुजुर्ग थे उनकी बात चीत सुनी तो लगा कि यह तो माँ से भी ज़्यादा मुहब्बत भरी आवाज़ में बोलने वाले और शफकत करने वाले हैं।

लोगों से मालूमात की तो मालूम हुआ कि यह मौलाना अलीमियां साहब रह0 के बड़े भाई डॉक्टर अब्दुल अली हैं जो एम.बी.बी.एस. डॉक्टर भी हैं, हकीम भी हैं, और आलिम भी हैं, और यही आज कल नदवतुल उलमा के नाज़िम हैं। यह बुजुर्ग हमारे मौलाना अब्दुल्लाह हसनी रह0 के दादा जान, जिनको सलाम करने का शरफ़ (प्रतिष्ठा) बन्दे को हासिल है।

सन् 1962 ई0 में जब मुझे दफ्तर "रिज़वान" में हज़रत मौलाना मुहम्मद सानी रह0 के आदेश से खिदमत का मौक़ा मिला तो देखा कि एक खूबसूरत जवान जो लगभग मेरी ही उम्र के हैं, जब तब दफ्तर "रिज़वान" में आकर बैठ जाते हैं, मालूम हुआ कि यह डॉक्टर अब्दुल अली रह0 के इक्लौते बेटे मुहम्मद मियाँ हैं, यह अरबी पत्रिका "अलबासुल इस्लामी" के एडीटर हैं। यह हमारे अब्दुल्लाह मियाँ रह0 के वालिद थे।

उस समय अब्दुल्लाह मियाँ पाँच वर्ष के थे, मैं बिला नाग़ा शाम दफ्तर "रिज़वान" में बैठता और रोज़ ही अब्दुल्लाह मियाँ से मुलाकात होती।

अब्दुल्लाह मियाँ की तालीम शुरु हुई, प्राइमरी से लेकर आठवीं (अरबी के दूसरे क्लास) तक की तालीम मेरी निगरानी में हुई, उस वक्त मैं अरबी से नाबलद था इसलिए अरबी के सिवा मैंने दूसरे सभी इब्तिदाई मज़ामीन अब्दुल्लाह मियां को पढ़ाया।

हमारे अब्दुल्लाह मियाँ बचपन से बड़े सीधे, बड़े नेक, बड़े संजीदा थे। अगर मैं कसम खाऊँ कि मैंने अब्दुल्लाह मियाँ को कभी ठट्ठा मार

कर हंसते नहीं देखा, कभी कोई बचकाना शरारत करते नहीं देखा तो मेरी कसम झूठी न होगी।

वह मदरसा सानवीया (माहद दारुल उलूम का शुरुअ का नाम) पास करके दारुल उलूम के दरजात में आए, आलिम हुए, फाज़िल हुए, यहाँ तक कि दारुल उलूम के उस्ताद हो गये और फिर तरक्की करके बड़े उस्तादों में हो गये। मैंने देखा बड़े उस्ताद हो जाने के बाद कुछ लोग अपने इब्तिदाई दरजात के उस्तादों को खातिर में नहीं लाते, लेकिन हमारे मौलाना अब्दुल्लाह मियाँ में यह बात न थी, वह अपने प्राइमरी के उस्तादों की वैसी ही इज्ज़त (आदर) करते जैसे ऊपर की तालीम के असातिज़ा की। यह उनकी बुजुर्गी की दलीलों में से एक दलील है।

हमारे अब्दुल्लाह मियाँ तक़रीर भी करते थे, उनकी तकरीरें बहुत पसन्द की जाती थीं, उमूमन तामीरे हयात में छपतीं और तामीरे हयात से हिन्दी करके हम सच्चा राही में छाप कर अपने पाठकों को पेश करते थे। यह तकरीरें आज भी उर्दू के तामीरे हयात में और हिन्दी के सच्चा राही में देखी और पढ़ी जा सकती हैं।

हमारे अब्दुल्लाह मियाँ गैर मुसलिमीन में इस्लाम का तआरुफ कराने में बड़ी महारत रखते थे, मुझसे कई पढ़े–लिखे गैर मुस्लिमों से बात हुई, जब भी मैंने उनके सामने इस्लाम का तआरुफ पेश किया वह कहने लगे किस इस्लाम का तआरुफ करा रहे हैं? शीआ का या सुन्नी का देवबन्दी का या बरेलवी का, मुकल्लिद का या गैर मुकल्लिद का? मैं हैरान रह जाता, बड़ी मुश्किलों से समझा पाता और शायद मुतमइन न कर पाता, लेकिन हमारे अब्दुल्लाह मियाँ से जो भी गैर मुस्लिम बात करता वह इन तमाम सवालों को भूल जाता और बहुत जल्द इस्लाम की सच्चाई को मान लेता। अस्ल में यह उनकी रूहानी ताकत थी और वह हिक्मत थी जिसके वास्ते से दावत की तालीम सिखाई गई है।

वह मुख़ालिफ को मुतमइन करने में बड़ी महारत रखते थे। अभी सच्चा राही के किसी पिछले अंक में छप चुका है कि एक साहब दावत के काम में बहुत कामयाब हैं, उनका बयान है कि उन्होंने ख़्वाब में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा, वह फरमा रहे हैं कि काम में और मेहनत करो और दाढ़ी मुंडा दो। शायद उन की समझ में आया कि हो सकता है कि यह दाढ़ी गैर मुस्लिमों के करीब आने में रुकावट बन रही है, वह दाढ़ी मुंडाने के लिए तैयार हो गए। मुझ जैसे कम समझ से वास्ता पड़ता तो मैं अपनी समझ के मुताबिक कहता कि जिस नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ताकीद के साथ दाढ़ी रखने का हुक्म दिया, वह दाढ़ी मुंडाने का हुक्म दें यह बात समझ में नहीं आती, या तुम ख़्वाब समझे नहीं या ग़लत बयानी कर रहे हो, ऐसे में वह उलझ कर रह जाता और राह न पाता। मगर वाह रे मौलाना अब्दुल्लाह मियाँ! फरमाया कि ख़्वाब का मतलब

बराह रास्त नहीं लिया जाता, उसकी तअ़बीर (अर्थ) होती है, तुम्हारे ख़्वाब की तअ़बीर यह है कि तुम दावत के काम में और ज़्यादा मेहनत करो, मगर प्रोपैगण्डे और दिखावे से बचो, दाढ़ी मुंडाने के हुक्म का यही मतलब हुआ। वह शख़्स समझ गया और मुतमइन हो गया, अपनी मेहनत बढ़ा दी, और दाढ़ी मुंडाने से बाज़ रहा। इस तरह हमारे मौलाना ग़ैरों को मुतमइन करते थे।

मौलाना से मेरे गहरे तअल्लुक़ात थे, वह मेरे घर भी आ चुके थे, वह मेरे बड़े लड़के मतलूब अहमद नदवी के उस्ताद थे। मतलूब से बड़ी मुहब्बत फरमाते, मतलूब मौलाना का बड़ा एहतिराम करते।

मौलाना जब अस्पताल में दाखिल हुए तो मुझे बड़ी तशवीश (आशंका) हुई। रोजाना ख़ैरियत मालूम करता, 30 जनवरी 2013 को हजरत मुफ्ती साहब के साथ बैठा मौलाना अब्दुल्लाह मियाँ के बारे ही में बातें कर रहा था कि मुफ़्ती साहब के बेटे मौलवी सुहैल नदवी ने आकर हादिसे की खबर दी, जैसे मुझ पर पहाड़ टूट पड़ा, जल्दी से लेट गया, लगा कि आखिरी वक्त है, मगर अभी मेरा वक़्त न आया था। मगरिब बाद दारुल उलूम की फील्ड़ में हज़रत मौलाना सईदुर्रहमान नदवी मुहतमिम दारुल उलूम ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई, अन्दाज़ा है कि पन्द्रह हज़ार से ज़्यादा लोग नमाज़े ज़नाज़ा में थे। फिर मौलाना को उनके आबाई वतन तकिया कलाँ, रायबरेली ले जाया गया, वहाँ उनकी दूसरी नमाज़े जनाज़ा हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी साहब ने बहुत बड़े मज़मे के साथ पढ़ांई और वहीं अपने कब्रिस्तान में दफ़्न हुए। इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन। मौलाना की पैदाइश 29 जनवरी 1957 ई0 में हुई थी और 30 जनवरी 2013 ई0 बुध के दिन आपकी वफ़ात हुई। आपने 56 साल की उम्र पाई। अल्लाह तआला आप की मग़फिरत फरमाए, और दरजा बुलन्द फरमाए। आमीन।

आपके एक साहबज़ादे हाफ़िज़ मुहम्मद मियाँ हैं जो लगभग 12 साल के हैं, वह ज़ेरे तालीम हैं। आपकी अहलिया हैं जो मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी साहब की बेटी हैं। आपके दो भाई हैं मौलाना अम्मार और मौलाना बिलाल हसनी, दोनों नदवी हैं, दोनों से अल्लाह तआला अपने दीन का काम ले रहा है।

अल्लाह तआला मौलाना के तमाम मुतअल्लिक़ीन को सब्रे जमील से नवाज़े और भाइयों को मौलाना के मिशन को ज़ारी रखने की तौफ़ीक़ दे। आमीन सुम्म आमीन। सच्चा राही उनके मुफीद मजामीन से महरूम हो गया। सच्चा राही का पूरा अमला ग़म में डूबा हुआ है और वह इस हाल मे हैं कि लोग उसकी ताज़ियत करें।

❑❑

हे प्रभू आनन्द दाता
ज्ञान हम को दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को
दूर हम से कीजिए

इस्लाम विरोधी प्रश्नों के उत्तर

—नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

प्रश्नः मुसलमान दाढ़ी क्यों रखते हैं?

उत्तरः अज्ञानता काल में लोगों में दाढ़ी मुंड़ाने और मूँछ बढ़ाने का आम चलन था। विशेषतः हिजाज़, मिस्र, ईरान और रोम की जनता और वहाँ के शासकों तथा उनके दरबारियों में दाढ़ी मुंड़वाने और मूँछ बढ़ाने का चलन आम था। लेकिन हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को दाढ़ी बढ़ाने और मूँछ कतरवाने की ताकीद की है।

पवित्र हदीस में हैः—

"हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 कहते हैं कि हम सबको हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मूँछें बारीक करने और दाढ़ियाँ छोड़ने का आदेश दिया है"। (तिर्मिज़ी)

"हजरत इब्ने उमर रज़ि0 कहते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि बहुदेववादियों की मुख़ालिफ़त करो और दाढ़ियाँ बढ़ाओ और मूँछें काटो"।

(बुख़ारी)

उपर्युक्त हदीसों से ये बात ज्ञात हो चुकी है कि दाढ़ी रखना इस्लामी संस्कृति का एक अंश है, और जैसा कि पहले ही बताया जा चुका है कि इस्लाम एक प्राकृतिक धर्म है। अतः उसके समस्त कार्य अथवा कर्म प्रकृति और साइंस की कसौटी पर खरे उतरते हैं। इसीलिए उसने जो दाढ़ी शेव न करवाने और मूँछ तरशवाने का आदेश दिया है वह अकारण नहीं, अपितु शेव कराने की बहुत सी हानियाँ हैं जो आगे लिखी जाती हैं।

शेव की हानियाँः—

"बर्लिन यूनिवर्सिटी के डॉ0 मुर ने शेव ब्लेड और साबुन पर वर्षों प्रयोग के बाद जो परिणाम निकाला है उसको मासिक "सेहत" देहली ने इस प्रकार बयान किया हैः—

त्वचा रोगः—

शेव से जितना नुकसान स्किन को पहुँचता है, शायद ही शरीर के किसी अन्य भाग को पहुँचता हो। दरअस्ल ब्लेड की धार स्किन को लगातार रगड़ती रहती है और हर आदमी की चाहत ये होती है कि चेहरे पर एक भी बाल मौजूद न हो, ताकि चेहरे के निखार और सुन्दरता से चेहरे की स्किन SENSITIVE हो जाती है और विभिन्न प्रकार के रोगों को स्वीकार करने की क्षमता प्राप्त कर लेती है।

चेहरे पर पहले मामूली फुंसियाँ निकल सकती हैं, फिर IMPEIGO के अतिरिक्त SYCOSIS BARBAC जैसे त्वचा रोग हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त कुछ ऐसे गंभीर रोग चेहरे पर और फिर उसके द्वारा समस्त शरीर को अपने लपेट में ले सकते हैं। वह रोग निम्नलिखित हैंः—

1. चेहरे के मुँहासे (ACNEV-ULGARIS)

2. चेहरे के स्किन की खुश्की (DANDRUF SEBORRHOES)
3. कील और छाइयाँ (ACNE ROSACEA)
4. नाक पर दाने और कील (RHINOPHYMA)
5. आम फोड़े–फुंसियाँ (BOILS)
6. एक्ज़िमा (ECZEMA)
7. एलर्जी (ALLERGY)

एक विशेष प्रभाव–

शेव का लगातार अमल PITUATARY GLAND पर बुरा प्रभाव डालता है, फिर इस GLAND के दोष के कारण यौन सम्बन्धी व्यवस्था अति प्रभावित होती है।

अल्ट्रावाइलेट किरणों से हानि–

पराबैंगनी किरणें (ULTRAVIOLET RAYS) संवेदनशील स्किन को अत्यधिक हानि पहुँचाती हैं, क्योंकि ये किरणें धूप में होती हैं, और धूप से बचना सम्भव नहीं है। अतः ये स्किन के ऊपरी भाग पर तुरन्त बुरे प्रभाव डालती हैं, जिससे स्किन की रंगत काली पड़ जाती है और त्वचा की तैलीय ग्रन्थि (OIL GLAND) का सिस्टम बुरी तरह प्रभावित होता है तथा विभिन्न प्रकार के रोग घेर लेते हैं।

मूँछें तरशवाना–

जैसा कि पहले ही हदीस के द्वारा ये स्पष्ट हो चुका कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दाढ़ी बढ़ाने और मूँछे तरशवाने की बड़ी ताकीद की है, अब मैं भूतकाल और वर्तमान काल में मूँछे बढ़ाने का जो चलन था और है उसकी हानियों की निशानदेही (INDICATE) करूँगा। अतः इस सम्बन्ध में ये स्पेशल रिपोर्ट प्रस्तुत है:–

कीवल फादर एक पुर्तगाली वैज्ञानिक DUTCH SCIENTIST हैं, उनके अनुसंधानुसार इंसानी होटों में बड़े हीं संवेदनशील GLANDS होती हैं और जिसका सम्बन्ध प्रत्यक्ष रूप से दिमाग़ से है, और पुरुष में ऐसे हार्मोन्स होते हैं जिनके लिए बाहरी प्रभाव और पानी अति आवश्यक है। जबकि ये काम यदि मूँछे हैं तो नहीं हो पाता। इसके विपरीत यदि मूँछे न हों तो ऊपर के होंट पर पानी भी लगेगा और हवा भी वहाँ लगेगी, अन्यथा मूँछे पानी और हवा को रोके रखती हैं।

यदि इन GLANDS को पानी और हवा न लगे तो उससे स्थायी रूप से नज़्ला, मसूढ़ों में सूजन और स्नायविक खिंचाव पैदा हो जाता है। इसके अतिरिक्त यदि मूँछें बड़ी हों तो कीटाणु उसमें अटक जाते हैं और यही कीटाणु उस समय अन्दर चले जाते हैं जब हम खाना अथवा कुछ और खा रहे होते हैं।

ये याद रहे कि निचले होंट की दशा ऊपर के होंट से एकदम विपरीत है। इसलिए इस्लाम में मूँछ तरशवाने और दाढ़ी बढ़ाने का आदेश है।

(हाइजीन एण्ड ह्यूमन)

❖❖❖

स्वागत एवं अनुरोध

हम आपके परामर्शों का स्वागत करते हैं तथा लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सरल भाषा में लिखें।

इदारा

नग्नता और अश्लीलता के दुष्प्रभाव

—इन्तिज़ार नईम

लज्जा और शर्म मानवता का स्वभाव है। मनुष्य को अपनी रचना के आरंभिक दिनों में पेड़ों के पत्ते ही उपलब्ध हो सके तो उसने उनको ही अपना परिधान बनाया और उनसे अपना तन ढक कर अपने सम्मान की रक्षा की, अपनी पवित्र प्रकृति का परिचय दिया और आगे चलकर नैतिकता तथा आचरण की किन ऊँचाइयों तक जाएगा इसका संकेत दिया।

इतिहास गवाह है कि मनुष्य ने अपने पालनहार से किये गये उस ख़ामोश वादे को जहाँ–जहाँ निभाया, वहाँ–वहाँ उसके जीवन में वास्तविक सुख और शांति रही और जब–जब उसने वचन भंग किया तब–तब उसे ख़तरों एवं असुविधाओं का सामना करना पड़ा, बल्कि ऐसी क़ौमें और ऐसी सभ्यताएं दुनिया से मिट कर ही रह गयीं। लेकिन यह मनुष्य की नासमझी है कि वह इतिहास से कम ही सीख लेता है और बर्बादी की प्रक्रिया को दोहराने के प्रयोग करता रहता है और जब स्वयं उसका भी वही भयानक अंजाम होता है तो उसके पास पछतावे और पलट आने का मौक़ा भी नहीं रहता।

इस समय दुनिया का बड़ा भाग इसके विषैले परिणाम से बेपरवाह हो कर अपनी प्रकृति से लड़ रहा है और भलाई एवं पवित्रता से दूर होता हुआ नग्नता और अश्लीलता को बढ़ावा देने के नित नये तरीक़े अपना रहा है। इस कारोबार में केन्द्रीय भूमिका महिला की निर्धारित की गई है और कुछ मक्कार और दुष्ट लोगों ने महिला को यह विश्वास दिलाने की कोशिश की है कि तुम्हें पुरुष की बराबरी करनी है, तुम उससे किसी तरह भी कम नहीं हो, जहां–जहां पुरुष मौजूद हैं, वहां–वहां तुम्हें भी पहुंचना चाहिए। परदा और लज्जा क्या चीज़ है? रूढ़िवाद तुम्हारी प्रगति के मार्ग में रुकावट और महिला स्वतंत्रता पर हमला है।

इन लुभावने नारों के जाल में फांस कर कमज़ोर महिला को दर–दर के चक्कर लगवाये जा रहे हैं। इसे क्लबों, खेल के कोर्टों और मैदानों की शोभा बनाया जा रहा है। इसे वस्त्रहीन करके तैराकी का आकर्षण बढ़ाया जा रहा है। इन तमाशों की चमक–दमक में महिला को यह एहसास भी नहीं हो पाता की उसके साथ क्या खेल खेला जा रहा है। जैसे अख़बारों में यह शर्मनाक घटना प्रकाशित हुई कि–

ग़ाज़ियाबद (उ0प्र0) में एक क्लब में पुरुषों ने अपनी पत्नियों को भी शरीक किया। ये ऊँचे घरानों और कार रखने वाले लोग थे। खाने–पीने के बाद क्लब के सदस्य अपने कारों की चाभियाँ एक

मेज़ पर जमा कर देते। उन्हें मिला दिया जाता और बत्ती बुझा दी जाती। फिर एक सदस्य मेज़ से एक चाभी उठा लेता। अंधेरे में जिसके हाथ जिस कार की चाभी लग जाती उसके मालिक की पत्नी उसके साथ रात गुज़ारती और इस तरह महिलाओं का आदान–प्रदान होता रहता। एक नयी और ग़ैरतदार दुल्हन द्वारा इस घिनौने खेल में शामिल होने से इन्कार करने और हंगामा करने के कारण मामला पुलिस तक पहुंचा, नहीं तो क्लब की यह अश्लील सक्रियता जाने कब तक चलती रहती और महिलाओं को बहुत एडवांस बताकर उनके मान–सम्मान से खिलवाड़ किया जाता रहता।

यह सच है कि महिला की नग्नता और उसके प्रदर्शन का पहला ज़िम्मेदार समाज खुद है जो लज्जा और शर्म की बहुमूल्य दौलत को अपनी आंखों के सामने लुटते और बर्बाद होते देख रहा है और चुप है। अगर वह इसके घिनौनेपन को कुछ महसूस भी कर रहा है तो उसके सुधार के लिए चिंतित होने के बजाय उससे समझौता किये हुए है।

इसके दूसरे बड़े ज़िम्मेदार दुनिया भर में गार्मेंट्स व्यापार के नाम पर नग्नता का सामान बेचने वाले वे लोग, संगठन एवं इंडस्ट्रीज़ हैं जिन्होंने फ़ैशन के बहाने महिला के वस्त्र को वस्त्रहीनता की सीमा में लाकर दुनिया को बेचैनी और अशांति का शिकार बना रखा है, फिर भी उनी वासना की तृप्ति नहीं हो रही है।

नग्नता और अश्लीलता के विकास में इलेक्ट्रानिक और प्रिंट मीडिया भी असाधारण भूमिका निभा रहा है। महिलाओं की बॉक्सिंग, स्वीमिंग और कई इन्य खेलों में नवजवान लड़कियों के अंग–अंग और उनकी एक–एक हरकत का कवरेज महिला सम्मान को तार–तार करता है और बदले में उसकी झोली में प्रशंसा के कुछ बोल और कभी–कभी कुछ मेडल डाल दिये जाते हैं। उसे यह सोचने का मौक़ा ही नहीं दिया जाता कि जो उसे मिला उसकी तुलना में वह कितना मूल्यवान था जो उसने खो दिया है। कुछ सिक्कों को पाकर वह यह भी विचार नहीं कर पाती कि उसको वस्त्रहीन करके इन खेलों के आयोजक उसका कितना शोषण करते हैं और ख़ुद करोड़ों रूपये, डालर या पाउंड कमाते हैं। इस स्थिति की आदी हो कर महिला अपने शोषण को अपना सम्मान समझने लगी है और कुछ कौड़ियों के बदले पत्रिकाओं के मुख्य पृष्ठ पर अख़बारों को विकास का प्रतीक समझने लगी हैं। इस अनैतिक और घिनौने कारोबार के लिए कई देशों में कुछ महिलाएं और कुछ पत्र–पत्रिकाएं विशेष प्रसिद्धि रखते हैं।

यही स्थिति फिल्मी इंडस्ट्रीज़ की है। स्थानीय से ले कर ओलंपिक खेलों तक महिला के सौंदर्य, उसके जलवों और उसकी अदाओं के प्रदर्शन की ख़रीद व फ़रोख़्त सामयिक और मौसमी होती है, लेकिन फ़िल्मी इंडस्ट्री के ज़रिए महिला के मान–सम्मान का कारोबार पूरी दुनिया में साल भर चलता रहता है। इसके कुछ

असभ्य दृश्य, अश्लील गानों, फूहड़ संवादों और म्यूज़िक के माध्यम से बहुत बड़े पैमाने पर अश्लीलता और नग्नता लगातार बनी रहती है। अब तो ऐसी फ़िल्मों का प्रचलन आम हो रहा है जो कठोर सेंसर के बावजूद अत्यधिक डर्टी होती हैं।

आश्चर्य है कि ऐसी फ़िल्में सेंसर बोर्ड से किस प्रकार और क्यों पास होती हैं। ब्लू फ़िल्में और टी0वी0 चैनल्स इस आग में पेट्रोल डालने का काम करते हैं। ये नग्न और अश्लील फ़िल्में प्रसारित कर समाज में पशुता का बढ़ावा देने का अपराध कर रहे हैं। भारत में टी0वी0 चैनल्स के प्रोग्रामों पर नज़र रखने वाली संस्था, ब्रॉडकास्टिगं कन्टेंट, कम्प्लेंट्स कौंसिल (B.C.C.C.) को 2011 में 717 शिकायतें मिलीं उनमें से लगभग आधी टी0वी0 के अश्लील प्रोग्रामों के ख़िलाफ़ थीं।

महिला को नंगा करने का एक आधुनिक ज़रिया सौंदर्य के राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुकाबले, मॉडलिंग और विभिन्न शोज़ हैं। इनमें समाज से सुन्दर लड़कियों को खोज करके आम तौर पर सौंदर्य प्रसाधनों के विज्ञापन के लिए होटलों और हॉलों में स्टेजों पर सैकड़ों हज़ारों दर्शकों के सामने इस तरह पेश किया जाता है कि उनके शरीर कपड़े पहनने के बावजूद कपड़ों से आज़ाद होते हैं और देखने वालों का पूरा ध्यान विज्ञापन सामग्री से ज्यादा उन अप्सराओं के शरीर पर होता है। समाज की ये बेटियां नंगी होकर किस अंजाम को पहुंचती हैं, इसका इज़हार भारत की एक मॉडल के 16 अगस्त 2012 को अख़बारों में इक़बालिया घोषणा और शिकायत से हुआ।

उसने बताया कि एक पाकिस्तानी क्रिकेट अम्पायर के साथ उसके शारीरिक संबंध थे और (बिना शादी के ही) वह अम्पायर को अपना पति मानती थी। अम्पायर ने मॉडल से संबंध को तो स्वीकार किया लेकिन उन आरोपों का खंडन किया। खुद उस मॉडल को अपने आरोपों की गन्दगी का बोझ तो पूरी उम्र ढोना ही पड़ेगा और भारतीय सभ्यता और समाज की छवि पर जो कलंक लगा रहेगा वह अलग।

अश्लील लेखों और चित्रों के प्रदर्शन और प्रचार किताबों, अख़बारों और विभिन्न भाषा की हज़ारों पत्रिकाओं के माध्यम से तो हो ही रहा था अब इसका सिलसिला इंटरनेट और मोबाइल तक जा पहुंचा है, जिससे परेशान होकर सरकार इनको कानून के दायरे में लाने पर विचार कर रही है।

खेलों और फिल्मों के ज़रिए आम हो रहे घातक कल्चर के दुष्प्रभाव से अब स्कूल, कॉलेज और यूनीवर्सिटियां भी सुरक्षित नहीं हैं, और ज्ञान और सभ्यता के पवित्र केन्द्र, विद्या के साथ–साथ समाज में नग्नता और अश्लीलता की कल्पनाएं ही नहीं, उनका प्रदर्शन भी आम कर रहे हैं। कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली की जानी–मानी जवाहर लाल नेहरू यूनीवर्सिटी की कुछ छात्राओं ने इस बात को लेकर विरोध प्रदर्शन किया कि उन्हें लड़कों के हॉस्टल में रहने

की अनुमति मिलनी चाहिए।

महिला के एक वर्ग को अस्वाभाविक समानता, प्रगति और फ़ैशन एवं वस्त्रहीनता के शौक़ ने स्वच्छन्द जीवन गुज़ारने के पागलपन में फंसा दिया है। लिव इन रिलेशनशिप का प्रकोप फैल रहा है। बिन ब्याही माएं और नाजायज़ बच्चे बढ़ते जा रहे हैं। पाश्विक कल्चर विकसित हो रहा है। विवाह की पवित्र कल्पना टूट रही है। तलाक़ की संख्या बढ़ रही है। आंकड़ों के अनुसार भारत में 1000 शादियों में से 11 तलाक़ पर समाप्त होती है। अदालतों में तलाक़ के मुक़दमों का बोझ बहुत अधिक है। आई0टी0 केन्द्र बंगलोर में केवल एक वर्ष 2006 में तलाक़ की 1246 घटनाएं हुईं। महाराष्ट्र के विकसित नगर पुणे में वर्ष 2007 में प्रति माह 240 तलाक़ की घटनाएं हुईं। परिवार टूट रहा है। समाज में नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है। महिला महसूस भी नहीं कर पा रही है कि इन सब चीज़ों से उसे कितना घाटा उठाना पड़ रहा है और वह किस भयावह परिणाम की ओर बढ़ रही है।

वर्ष 2010 ई0 में एक सर्वे के अनुसार सुपर पॉवर अमेरिका में 2 करोड़ 20 लाख महिलाओं के साथ जीवन में कभी न कभी बलात्कार हुआ। हर पांच में से एक अमेरिकी महिला कभी न कभी बलात्कार का शिकार हुई। 2000 ई0 के एक सर्वे के अनुसार 4–5 छात्राओं में से एक के साथ बलात्कार हुआ। प्रभावित महिलाओं की आधी संख्या 18 वर्ष से कम और अधिकतर महिलाओं की उम्र 25 वर्ष से कम ही होती है। 2008 ई0 के एक सर्वे से पता चला कि बच्चों के साथ होने वाले अधिकतर यौन उत्पीड़न की आमतौर पर रिपोर्ट नहीं दर्ज हो पाती, फिर भी 2006 ई0 में 7800 बच्चों का यौन उत्पीड़न हुआ।

अमेरिका के डिपार्टमेंट ऑफ जस्टिस के 2000 ई0 के सर्वे के अनुसार अमेरिका में हर दो मिनट में कहीं न कहीं किसी न किसी का बलात्कार होता है और ऐसा करने वाले 2/3 लोग अपने संबंधी और जानने वाले ही होते हैं। यौन अपराधों की शिकार होने वाली 67 प्रतिशत महिलाएं श्वेत होती हैं।

दुनिया की बहुत सारी तबाहियों और बर्बादियों के ज़िम्मेदार अमेरिकी साम्राज्य का सहयोगी यू0के0 यहां भी अमेरिका के साथ–साथ है। ब्रिटेन में भी प्रतिवर्ष 80,000 महिलाओं का बलात्कार होता है। दिल्ली से प्रकाशित अंग्रेज़ी दैनिक टाइम्स ऑफ इंडिया ने 29 अगस्त 2012 के प्रकाशन में डेली मेल के हवाले से ख़बर प्रकाशित की कि ब्रिटेन में शहंशाहियत के तीसरे प्रत्याशी प्रिंस हैरी लॉस वेगास के एम0जी0एम0 होटल में बिल्कुल नंगे होकर बिलयर्ड्स खेल रहे थे। एक दूसरे चित्र में प्रिंस और एक लड़की दोनों बिल्कुल नंगे हो कर गले मिल रहे हैं। 1200 लोगों ने नंगे हो कर प्रिंस हैरी को सैलूट किया, जिसमें ब्रिटिश सेना के हज़ारों सिपाही थे।

ब्रिटेन से ही जुड़ी एक ख़बर 15 सितम्बर 2012 के

अख़बारों में प्रकाशित हुई कि फ्रांसीसी पत्रिका ने आज ब्रिटिश राजकुमारी केट मेडिल्टन की अर्द्धनग्न तस्वीरें प्रकाशित की हैं। ब्रिटिश शाही परिवार ने उस पत्रिका के विरुद्ध क़ानूनी कार्यवाई करने की धमकी दी है। फ्रांसीसी पत्रिका 'क्लोज़र' ने केट की कुछ तस्वीरें छापी हैं। प्रिंस विलियम और केट पिछले दिनों फ्रांस में छुट्टियां बिता रहे थे, जहां से 'क्लोज़र' ने ये तस्वीरें ले लीं और चित्र परिचय में लिखा कि ''भविष्य की ब्रिटिश रानी को इस हालत में देखिए, जिसमें उन्हें पहले कभी नहीं देखा गया और शायद आगे भी नहीं देखा जाए''। ❑❑

हजराते सहाबा रज़ि0 .....

साफ और वाज़ेह बात कहते और इन्साफ के साथ फैसला करते। इल्म उनके हर पहलू से चश्मे की तरह उबलता और हिकमत उनके हर रोएं से टपकती थी। इसी तरह से दीगर औसाफ़ गिनाए। यह सुन कर हजरत मुआविया इस क़दर मुतअस्सिर हुए कि उनकी दाढ़ी आँसुओं से तर हो गई। रोते–रोते हिचकियां बंध गईं। यह था हज़रत अली और मुआविया रज़ि0 के बीच बाहमी रब्त व इजतिहादी। मसाइल में इख़्तिलाफ को उन्होंने किरदार कुशी का ज़रिया नहीं बनाया।

हजरत अली रज़ि0 की शहादत के बाद हजरत हसन के हाथ पर बैअ़त कूफा की मस्जिद में मुनअ़क़िद हुई। पूरा निजामे खिलाफते सही रुख़ पर चल रहा था कि अचानक हजरते हसन रज़ि0 को यह इत्तिला मिली कि मसअल–ए–ख़िलाफत को बुनियाद बना कर कुछ लोग मुआशरे में शर व फसाद की तुख़्मरेज़ी कर रहे हैं। इस खबर की तहकीक करके हजरत हसन रज़ि0 6 माह तक ख़िलाफ़त के निज़ाम को संभालने के बाद बहुत ही ख़ुश उस्लूबी के साथ ख़िलाफत से दस्त बरदार हो गये। हजरत मौलाना सय्यिद अबुल हसन अली नदवी रह0 लिखते हैं: ''यह वह कुर्बानी है जो हजरत हसन बिन अली ने हजरत मुआविया के मुकाबले में उम्मत के इन्तिशार को ख़त्म करने के लिए दी थी। इस तरह हजरत रसूले अकरम की वह पेशीनगोई हर्फ ब हर्फ सादिक़ आई, जिसमें आया है:– मेरा यह बेटा सरदार है, क्या अजब है कि अल्लाह तआला इसके ज़रिए मुसलमानों के दो गिरोहों और जमाअतों के दरमियान मसालहत कर दे''। (दावते फिक्र व अमल:26)

यह नमूना है कि सख़्त हालात में मुतनाज़ेअ़ फीह मुआमले को कैसे हल किया जाए। इसी के साथ आपसी इख़्तिलाफात में राहे ऐतिदाल के इख़्तियार करने से मुआमला किस क़दर आसान हो गया।

अल्लाह तआला हम सब को सहाब–ए–किराम की अज़मत व रफ़अत और मकाम व मरतबे को समझने और उनके नक्शे कदम पर चलने की तौफीक़ अता फरमाए। आमीन।

(तामीरे हयात 10 जनवरी 2013 से संक्षेप के साथ ग्रहीत)

❖❖❖

इस्लाम में उदारता की शिक्षा

—मतीन तारिक़ बाग़पती

इस घटाटोप अंधेरे में इस्लाम एक रौशनी का मीनार है, जिसकी रौशनी हर एक पर फैली, जिसने पहले दिन से अमीर–ग़रीब, मालिक–गुलाम और अपने–पराये सबको समान रूप से संबोधित किया और साफ़–साफ़ बताया कि ख़ुदा पूरी कायनात (ब्रह्माण्ड) का, खुद इन्सान का और यहां की तमाम उन चीज़ों का बनाने वाला है, जिनसे इन्सान इस दुनिया में लाभ उठा रहा है। जैसा कि स्वयं उसी ने अपनी पुस्तक पवित्र कुर्आन मजीद में फ़रमाया भी है–

"वही है जिसने आसमान और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया है।"

(कुर्आन 6:73)

"लोगो! अपने रब से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और दोनों से बहुत–से मर्द और औरत दुनिया में फैला दिये।"

(कुर्आन 6:73)

अर्थात किसी को किसी पर श्रेष्ठता प्राप्त नहीं। सभी लोग एक ही मर्द–औरत की संतान हैं, एक समुदाय हैं, एक बिरादरी हैं, इसलिए उनमें आपस में मुहब्बत होनी चाहिए। एक को दूसरे का सम्मान करना चाहिए और हर इन्सान को दूसरे इन्सान के साथ भलाई, शिष्टाचार, भाईचारे का संबंध रखना चाहिए, क्योंकि सबको एक ही ख़ुदा ने पैदा किया है। इसकी तरफ़ इशारा करते हुए कुरआन की एक दूसरी आयत में फ़रमाया "लोगो! हमने तुमको एक मर्द और एक औरत से पैदा किया और फिर तुम्हारी क़ौमें और बिरादरियां बना दीं ताकि तुम एक–दूसरे को पहचानो। वास्तव में अल्लाह की दृष्टि में तुम में सबसे ज़्यादा प्रतिष्ठित वह है जो तुम में सबसे अधिक परहेज़गार (ईशभय रखने वाला) है।"

(कुर्आन 49:13)

इस आयत की व्याख्या में इस्लामी विद्वान मौलाना मौदूदी रह0 लिखते हैं "इस आयत में सारे इन्सानों को संबोधित करके उस सबसे बड़ी गुमराही का सुधार किया गया है जो संसार में हमेशा विश्वव्यापी फ़साद का कारण बनी रही है, अर्थात रंग, नस्ल, भाषा, वतन, क्षेत्रीयता व राष्ट्रीयता का भेदभाव। प्राचीन काल से आज तक हर काल में इन्सान आमतौर से इन्सानियत की अनदेखी करके अपने चारों तरफ़ कुछ छोटे–छोटे दायरे खींचता रहा है, जिनके अन्दर पैदा होने वालों को उसने अपना और बाहर पैदा होने वालों को पराया क़रार दिया है। ये दायरे किसी अक़्ल व नैतिकता के आधार पर नहीं, बल्कि संयोगवश पैदाइश के आधार पर खींचे गये हैं। कहीं उनका आधार एक ख़ानदान, क़बीले या नस्ल में पैदा होना है और कहीं एक भौगोलिक क्षेत्र में

एक विशेष रंगवाली या एक विशेष भाषा बोलने वाली क़ौम में पैदा हो जाना है। फिर इन बुनियादों पर अपने और पराये का जो अन्तर किया गया है, वह यहीं तक सीमित नहीं रहा कि जिन्हें इस लिहाज़ से अपना ठहराया गया हो कि उनके साथ परायों की तुलना में अधिक सम्बन्ध रखना और उनकी अधिक मदद करना हो, बल्कि इस अन्तर ने नफ़रत, दुश्मनी, तौहीन व बेइज़्ज़ती और ज़ुल्म व अन्याय की बदतरीन शक्लें अपना ली हैं। इसके लिए दर्शन घड़े गये हैं। मज़हब (धर्म) ईजाद किये गये हैं। क़ानून और नैतिक उसूल बनाए गये हैं। राज्यों और जातियों ने इसको अपनी स्थायी नीति बनाकर सदियों इसको व्यावहारिक रूप में लागू किया है। यहूदियों ने इसी आधार पर अपने आपको खुदा की चुनी हुई क़ौम ठहराया और अपनी धार्मिक शिक्षाओं तक में ग़ैर– इसराइलियों के हक़ों और रुतबे को इसराइलियों से कमतर रखा। हिन्दुओं के यहां वर्ण–आश्रम को इसी भेदभाव ने जन्म दिया, जिसके आधार पर ब्राह्मणों की उच्चता स्थापित की गयी। ऊँची जाति वालों की तुलना में सारे इन्सान नीच और अपवित्र ठहरायें गए और शूद्रों को अत्यंत अपमान के गड्ढ़े में फेंक दिया। काले–गोरे के भेदभाव ने अफ़्रीका और अमेरिका में काले वर्ण के लोगों पर जो ज़ुल्म व अत्याचार ढाये उनको इतिहास के पृष्ठों में तलाश करने की आवश्यकता नहीं, आज भी हर व्यक्ति अपनी आँखों से उन्हें देख सकता है।

यूरोप के लोगों ने अमेरिकी महाद्वीप के अन्दर घुसकर 'रेड इंडियन' नस्ल के साथ जो बर्ताव किया और एशिया और अफ़्रीका की कमज़ोर नस्लों पर अपनी सत्ता स्थापित करके जो बर्ताव उनके साथ किया, उसकी तह में भी यही सोच काम कर रही थी कि अपने वतन और अपनी क़ौम से बाहर पैदा होने वालों की जान–माल और इज़्ज़त–आबरू उनके लिए वैध है और उन्हें हक़ पहुंचता है कि परायी क़ौमों को लूटें, ग़ुलाम बनाएं और ज़रूरत पड़े तो उन्हें दुनिया से मिटा दें। पश्चिमी देशों के राष्ट्रवाद ने एक देश को दूसरे देश के लिए जिस तरह दरिन्दा बनाकर रख दिया है, उसकी बदतरीन मिसालें इस सदी की लड़ाइयों में देखी जा चुकी हैं और आज भी देखी जा रही हैं। विशेष रूप से नाज़ी जर्मनी का मानवता–दर्शन और नार्डक नस्ल की बरतरी की सोच पिछले विश्व युद्ध में जो करिश्मे दिखा चुकी है, उन्हें सामने रखते हुए आदमी आसानी से अंदाज़ा लगा सकता है कि नस्लपरस्ती और राष्ट्रीय पक्षपात कितनी बुरी और तबाह करने वाली गुमराही है जिसके सुधार के लिए क़ुर्आन मजीद की यह आयत अवतरित हुई।

तफ़हीम ल क़ुर्आन, खंड–5, पृ0 95 से 96)। दुनिया के लोगों का हमेशा से यही नियम रहा है कि अपने से अलग लोगों और दूसरी क़ौमों के साथ भेदभाव का व्यवहार करते रहे हैं, जैसा कि ऊपर

शेष पृष्ठ..... 39 पर

नैतिक पतन के लिए ज़िम्मेदार कौन?

—हनीफ़ा बेगम

बदलाव प्रकृति का नियम है। वर्ना समाज और लोगों में नीरसता आ जाती है। जब बदलाव की बात आती है तो यह दोनों तरह के होते हैं। अच्छे, मन को भाने वाले और ख़राब। ख़राब और अच्छे की परिभाषा हर आदमी के लिए अलग–अलग हो सकती है। यह सुखद सच है कि बदलाव ने ज़िन्दगी को बहुत आसान बना दिया है। तमाम ऐसे सुख हैं जिन्हें न तो शब्दों में बयान किया जा सकता है और न पहले लोगों ने इसकी कल्पना की थी। इस बदलाव से हर सुख–सुविधा उन लोगों को भी मिलने लगी है जो ग़रीब और उपेक्षित माने जाते हैं। लेकिन यह मानने में भी कोई संकोच और संदेह नहीं होना चाहिए कि कुछ सामाजिक बदलावों ने लोगों को कई तरह से कमज़ोर किया है। ख़ास कर जीवन मूल्यों और नैतिकता के मामले में। साम्प्रदायिक सौहार्द से लेकर पारिवारिक भावनात्मक लगाव तक ख़त्म हो गये हैं और हो रहे हैं।

सभ्यता, संस्कार एवं नैतिक मूल्यों के लिए जो भारत जाना जाता था उसका घोर पतन हुआ है। जिधर देखो उधर अनैतिक संबंध, बेशर्मी, लालच, भ्रष्टाचार, स्वार्थ, दुश्मनी तथा किसी भी तरह से रूपया हथियाना आदि का बोलबाला है। इसी को आधुनिक सभ्यता और बेहतर जीवनशैली माना जा रहा है। इसे हम पश्चिमी सभ्यता से जोड़कर देखते हैं। इससे मानने लगे हैं कि हम अमेरिका जैसे विकसित देशों का मुक़ाबला कर रहे हैं या उनके मुक़ाबले में आ गये हैं।

आख़िर नैतिकता का पतन क्यों हो रहा है और अनैतिकता क्यों अपने चरम पर पहुंच रही है। नैतिक मूल्यों के ह्रास के लिए कौन ज़िम्मेदार है। इन सवालों का जवाब गूढ़ नहीं है। दरअस्ल जो लोग नैतिक पतन और नंगेपन को लेकर छाती पीट रहे हैं वही लोग इसे बढ़ावा दे रहे हैं।

आज जो कुछ भी हो रहा है उसे यह कहकर हम टाल देते हैं कि 'अरे साहब! ज़माना बदल रहा है अब क्या करें, जो हो रहा है वह ठीक है'। पहले अनैतिक काम करने वालों का सामाजिक बहिष्कार होता था। लोग उस परिवार से बात नहीं करते थे। बिरादरी के लोग रिश्ते नहीं करते थे। आज चाहे उसके परविार में सब चोर, लंपट और बदमाश हों लेकिन उसके घर में पैसा हो तो लोग उसका बहिष्कार करने के बजाए उसके आगे–पीछे घूमते हैं। उसके बच्चों का रिश्ता होने में देर नहीं लगती है। रिश्ता करने वाले ये वही लोग हैं जो अनैतिकता और नैतिक मूल्यों के ह्रास को लेकर नौ–नौ आंसू बहाते हैं। दिन–रात चिंता में डूबे रहते हैं और इसे लेकर हाय–हाय करते रहते हैं।

कौन किस तरह से पैसे कमा रहा है इसे कोई नहीं देख रहा है। जिसके पास पैसा है वही बड़ा आदमी है, वही देवता है। वही कृपालु है, वही दयालू है। भ्रष्ट तरीक़े से जो आदमी करोड़ों रूपये कमा लेता है वह दस–बीस हज़ार दान कर दानी बन जाता है। अभी पांच दिसम्बर 2012 को ख़बर पढ़ी कि हत्या, अपहरण और कई अन्य संगीन मामलों के विचाराधीन कुख़्यात डकैत शिवदत्त के साथ राजस्थान के धौलपुर ज़िले के राजाखेड़ा में राजस्थान सशस्त्र पुलिस के सिपाही रूप सिंह ने उसके साथ अपनी बेटी मोना का ब्याह रचाया। जिस समय विवाह होना था उस समय भी वह जेल में था। इसलिए कोर्ट ने पुलिस की कड़ी निगरानी में विवाह संपन्न कराया ताकि वह पहले की तरह भाग न जाए। वह पुलिस का चकमा देकर भाग चुका था। विवाह की रस्म होने के बाद शिवदत्त को पुनः जेल भेज दिया।

क्या पहले कल्पना की जा सकती थी कि कोई पिता अपनी बेटी का हाथ डकैत के हाथ में देगा। लोग रिश्ता करने से पहले सात पुश्तों की छानबीन किया करते थे, मगर आज? कहीं कोई सामाजिक बहिष्कार का नाम नहीं। लोग साम्प्रदायिकता और वैमनस्य फैलाने से क्यों गुरेज़ करें? इससे उनका सामाजिक बहिष्कार नहीं होता बल्कि उनकी पहचान बनती है। यूं तो इस देश में जाति और क्षेत्र आधारित राजनीति करने वालों की कमी नहीं लेकिन एक ऐसे नेता भी रहे जिन्होंने एक शहर को टापू बनाकर रखा था। आतंक इतना कि उनकी समानान्तर सरकार चलती थी। देश के दूसरे प्रांत के आदमी को वहां से मार–मारकर भगा दिया जाता था। लेकिन उनकी मौत पर लोगों का हुजूम ही नहीं देश की जानी–मानी हस्तियां मौजूद थीं। इसलिए नहीं कि वह लोकप्रिय थे बल्कि इसलिए कि उनके दल के 'जवान' छोटे लोगों की ही नहीं बड़े लोगों की ख़बर ले सकते थे। मौत पर इतना सम्मान!

कौन किस रिश्ते का सम्मान कर रहा है। जो रिश्ते सबसे ज़्यादा पवित्र माने जाते थे जैसे बाप–बेटे, भाई–बहन, मामा–भांजी, फूफा, चाचा ताऊ, मौसा जैसे रिश्ते आज कलंकित हो चुके हैं। बेटा–बाप को मार रहा है, बेटी माँ को। भाई–भाई का खून कर रहा है। ऐसे मामले रोज़ाना सामने आ रहे हैं जिन पर विश्वास करना मुश्किल हो जाता है। अपराधी खुलेआम शान से घूम रहे हैं।

हम किसी का विरोध क्यों नहीं करते, क्योंकि हमारे विरोध में दम नहीं होता। एक विरोध करता है तो स्वार्थवश दस उसके पक्ष में खड़े हो जाते हैं। कोई गुंडा–बदमाश आपकी किसी भी तरह की मदद कर दे तो आप उसके गुलाम हो जाते हैं। उसकी बुराइयां यह कह कर नज़र अंदाज़ कर देते हैं कि भैया हमारे लिए तो वह ठीक है।

इस बारे में दिल्ली के मशहूर मनोचिकित्सक और इंदिरा गांधी अस्पताल के पूर्व

शेष पृष्ठ..... 32 पर

ईश्वरीय शिक्षाओं से दूर होने का नतीजा

—मुशर्रफ़ अली

क्या यूरोप की तरह हमारे देश में भी परिवार और समाज टूट रहा है? क्या मानवीय संवेदनाओं के लिए हमारे देश में भी जगह कम पड़ती जा रही है? बड़े शहरों में समय–समय पर ऐसी घटनाएं घटित होती रहती हैं, जो इन सवालों के जवाब 'हाँ' में देती हैं। व्यक्ति, समाज और परिवार का भीतरी ताना–बाना मानो बिखर रहा है। राजधानी दिल्ली में फिर ऐसी एक घटना सामने आयी, जिसने मानवता को एक बार फिर शर्मिन्दा कर दिया।

रोहिणी में दो बहनें पिछले 8 वर्षों से अपने घर में बन्द थीं और पिछले 4 महीनों से वे भूखी भी थीं। एक रिश्तेदार ने अस्पताल फ़ोन कर इसकी सूचना दी, इसके बाद ही यह बात मीडिया में आयी और लोगों को इसके बारे में मालूम हुआ। ठीक इसी तरह दो बहनों के वर्षों से अपने घर में नज़रबन्द होने की एक घटना पिछले साल नोएडा में भी सामने आ चुकी है।

नोएडा वाला मामला केवल इस मानों में अलग था कि वह उन दो बहनों तक ही सीमित था, उस घर में उनके अलावा कोई तीसरा नहीं था, लेकिन दिल्ली के रोहिणी में ऐसा नहीं था। उस घर में उन दोनों बहनों की 62 वर्षीय माँ और बड़ी बहन ममता का 13 वर्षीय बेटा भी उनके साथ रह रहा था। यह बड़ी विचित्र बात है कि घर में एक किशोर भी है जो स्कूल भी जाता है, मगर उसने भी अपनी माँ और घर की हालत के बारे में किसी को नहीं बताया, उस वृद्धा ने भी जो घर से बाहर निकलतीं थी, मगर घर की स्थिति से किसी को अवगत नहीं कराया?

मामला नोएडा का हो या रोहिणी का, इनका कारण आर्थिक तंगी नहीं आर्थिक भय रहा है। नोएडा में जिन दो बहनों ने महीनों तक ख़ुद को अपने घर में क़ैद कर रखा था वे समृद्ध परिवार से सम्बन्ध रखती थीं, और उनमें से एक किसी अच्छी जगह नौकरी करती थी। पिता की मौत के बाद उनके अन्दर यह भय समा गया कि उनका भाई जो अलग रहता है वह पिता के छोड़े हुए इस मकान पर क़ब्ज़ा कर लेगा और व दोनों बेघर हो जाएंगी। यह भय उनके मन में इतना गहरा समा गया कि वे घर को ख़ाली छोड़ने के लिए तैयार नहीं हुईं और अकेले घर में रहते–रहते अवसाद का शिकार हो गयीं।

अंततः एक महिला समाज सेविका ने दोनों बहनों को घर से बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया। दोनों बहनें बुरी तरह कुपोषण का शिकार थीं। बड़ी बहन की अस्पताल में मौत हो गयी और छोटी बहन स्वस्थ होने के बाद अपने भाई के साथ रह रही है।

रोहिणी के ताज़ा मामले में आर्थिक तंगी का भय ही बड़ा कारण नज़र आता है। बड़ी बहन ममता की तलाक़ हो जाने के बाद वह अपने बेटे को लेकर अपने मायके में ही रहने लगी। उसी दौरान उनके पिता की भी मृत्यु हो गयी, जिसके बाद घर में आमदनी का कोई स्रोत नहीं रह गया। इस बात को दोनों बहनों ने इतनी गहराई से महसूस किया कि वे अवसाद का शिकार हो गयीं। उन्हें अपना जीवन बोझ लगने लगा, उनकी भूख और नींद भी ख़त्म हो गयी। धीरे–धीरे उनकी स्थिति यह हो गयी कि बाहर की दुनिया से उनका संबंध पूरी तरह टूट गया। वे अपने आप तक सीमित हो गयीं और बिस्तर से लग गयीं। पड़ोसियों, रिश्तेदारों ने भी उनकी कोई ख़बर नहीं ली। इनका एक चचेरा भाई और एक मामा कभी–कभी उनकी कुछ आर्थिक सहायता कर जाता।

परिवार की हालत देखते हुए कहा जा सकता है कि मामला आर्थिक तंगी का नहीं है। रोहिणी सेक्टर 8 में जहां उनका मकान है वहां अगर वे मकान की ऊपरी मंज़िल को किराये पर उठा देतीं तो उन्हें अच्छा किराया प्राप्त हो सकता था। वैसे भी ऊपरी मंज़िल उनके इस्तेमाल में नहीं थी और आठ वर्षों से उसका रख–रखाव भी नहीं हो पाया है। इसके अलावा वे बहनें काम कर सकती थीं। उस क्षेत्र में वैसे भी महिलाओं के लिए घर बैठे काम करने के लिए बहुत अवसर हैं। बहुत सी महिलाएं हैं जो अपने घरों पर काम करके अपनी और परिवार की परवरिश कर रही हैं। बहुत सी महिलाएं तो ऐसी भी हैं जिनके पति असमर्थ होने के कारण उन पर ही आश्रित हैं। वे पति का बोझ भी उठा रही हैं और बच्चों को शिक्षा भी दिला रही हैं।

ममता गुप्ता के मामले को उसकी नकारात्मक सोच ने बहुत बिगाड़ दिया। पति से तलाक़ मिलने और पिता की मृत्यु हो जाने के बाद वह तनाव का शिकार हो गयी। छोटी बहन नीरजा गुप्ता जो ममता से 8 साल छोटी है और जिसे ममता के साथ स्वाभाविक रूप से सहानुभूति है, ममता के दुख में बराबर की शरीक होने के कारण वह भी तनाव में आ गई। बढ़ते–बढ़ते तनाव ने अवसाद का रूप ले लिया। ऐसे में रिश्तेदारों और पड़ोसियों का स्नेह उन्हें अवसाद से बाहर निकाल सकता था। स्वयं उनकी माँ की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती थी। रिश्तेदारों और पड़ोसियों ने भी संबंध विच्छेद कर लिए और मां ने भी कोई सकारात्मक भूमिका नहीं निभायी, बल्कि माँ ने तो रिश्तेदारों और पड़ोसियों से सच्चाई भी छिपाये रखी। संयोगवश एक रिश्तेदार जो कभी–कभी इनकी आर्थिक मदद करने आता था, उसने दोनों बहनों की हालत देख ली और तुरंत कैट्स एम्बुलेंस को इसकी सूचना दे दी। सूचना पाकर वहां पहुंचे कैट्सकर्मी हालात देख कर दंग रह गये। उन्होंने अविलंब दोनों बहनों 40 वर्षीय ममता और 32 वर्षीय नीरजा को

बाबा साहब अम्बेडकर अस्पताल में भर्ती कराया। इनके शरीर से तेज़ बदबू आ रही थी। डॉक्टर और नर्स ने मास्क लगाकर उनके शरीर साफ़ किये जो घावों से भरे थे। ममता की हालत ज़्यादा ख़राब थी, शरीर सिकुड़ कर गोलाकार हो गया था और हड्डियां दिखायी पड़ रही थीं। डॉक्टरों के अनुसार दोनों बहनों का वज़न 13–15 किलो के बीच पाया गया। बड़ी बहन तो बोल भी नहीं पाती थी। अस्पताल के डॉक्टर्स अभी किसी नतीजे पर नहीं पहुंचे हैं।

महानगरीय जीवन में तनाव और अवसाद की समस्या आम है। कई घरों में इसके लक्षण देखे जा सकते हैं। आमतौर पर ख़राब पारिवारिक और आर्थिक स्थिति को इसका कारण बताया जाता है, लेकिन इसके लिए आधुनिक जीवन शैली और वर्तमान सामाजिक ढाँचा अधिक ज़िम्मेदार है।

समाज एक इकाई न रह कर व्यक्तियों का एक समूह मात्र रह गया है, बल्कि अब तो पारिवारिक स्तर पर भी प्रत्येक सदस्य निरंकुश और जवाबदेही से मुक्त होता जा रहा है। हालांकि इन्सानों को ज़मीन पर भेजने वाले अल्लाह ने इन्सानों के लिए जो जीवन व्यवस्था बनायी है, उसमें पड़ोसियों और रिश्तेदारों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है। परिवार और समाज का प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे के प्रति उत्तरदायी है। किसी व्यक्ति का पड़ोसी अगर भूखा सो जाता है तो इसके लिए उसे अल्लाह के सामने सख़्त जवाबदेही करनी पड़ेगी और उसकी इबादतें और नेकियां भी उसे बचा नहीं सकेंगी। रिश्तेदारों की ख़बरगीरी का भी अल्लाह ने अपनी किताब में बार–बार आदेश दिया है। कहा है कि व्यक्ति की कमाई में उसके निकट और दूर के रिश्तेदारों का भी हक़ है। यानी वह किसी रिश्तेदार की मदद करके उस पर कोई एहसान नहीं करेगा बल्कि उसका हक़ अदा करेगा। इतना ही नहीं रिश्तेदारों और पड़ोसियों के अलावा भी हर व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति पर हक़ है, जिसे हर हाल में अदा करना है, क्योंकि इनके बारे में अल्लाह के यहां पूछताछ होने वाली है। ईश्वरीय शिक्षाओं से हम जितनी दूर होते जा रहे हैं, हमारे लिए उतनी ही समस्याएं बढ़ती जा रही हैं। ❑❑

नैतिक पतन .....

विभागाध्यक्ष डॉ0 टी0पी0 जिंदल कहते हैं कि यह घटते सामाजिक मूल्य हैं। चालीस साल पहले जिन बातों की कल्पना नहीं की जाती थी आज उससे बढ़ कर सामने आ रहा है।

कल्चर, फिल्म–टी0वी में बढ़ती नग्नता जैसे कई कारण हैं। लोग इन सब बातों को एकसेप्ट करने लगे हैं। इससे घटते सामाजिक मूल्यों को और बढ़ावा मिल रहा है। शिक्षा जगत से जुड़े इस्टर्न दिल्ली पब्लिक स्कूल के चेयरमैन जगत सिंह नागर कहते हैं कि आज लोग मनी माइंडेड हो गये हैं। उन्हें सिर्फ़ पैसा चाहिए उसके आने का तरीक़ा चाहे जो हो इसे कोई नहीं देखना चाहता। ❑❑

आपके प्रश्नों के उत्तर ?

—मुफ्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः जब इन्सान क़रीबुल मर्ग हो तो उसे किस तरह लिटाया जाये? इस बारे में पूरी वज़ाहत के साथ रहनुमाई करें, क्योंकि अकसर देखा जाता है कि लोग मय्यत को इस तरह लिटाते हैं कि पाँव क़िब्ला रूख होता है, जो खिलाफे अदब मालूम होता है?

उत्तरः जब इन्सान के इन्तिक़ाल का वक़्त क़रीब हो जाये तो उसे क़िब्ला रुख कर देना चाहिये। क़िब्ला रुख करने की दो सूरतें हैं, एक यह है कि जैसे सोते वक़्त दाहिनी करवट सोना मसनून है, इसी तरह दाहिनी करवट लिटा दिया जाये, दूसरा तरीक़ा यह है कि चित लिटा दिया जाये और पांव और चेहरा दोनों क़िब्ला रूख हो, चेहरे को क़िब्ला रूख करने के लिये सर के नीचे कुछ रख दिया जाये ताकि सर ऊँचा हो जाये और चेहरा क़िब्ला की तरफ मुतवज्जह हो, इस सूरत में पाँव क़िब्ला रुख होता है, लेकिन असल मक़सूद पाँव को क़िब्ला रूख करना नहीं होता है, बल्कि चेहरे को क़िब्ला रुख करना मक़सूद होता है, इसलिये यह क़िब्ले की बेअदबी नहीं बल्कि क़िब्ले की तरफ रुख करने का एक अलामती अमल है, जिससे अल्लाह तआला की तरफ मुतवज्जह होने का इज़हार होता है।

प्रश्नः क्या मय्यत के क़रीब क़ुर्आन मजीद पढ़ सकते हैं?

उत्तरः मय्यत को जब तक ग़ुस्ल न दिया जाये उस वक़्त तक वह नापाक है, इसलिये ग़ुस्ल से पहले मय्यत के क़रीब क़ुर्आन पढ़ना मकरूह है, अलबत्ता ग़ुस्ल देने के बाद पढ़ सकते हैं ।

प्रश्नः मय्यत को रिश्तेदारों के इन्तज़ार में देर तक रखते हैं, कभी—कभी एक दिन और एक रात का वक़्फ़ा हो जाता है, ऐसा करना शरअन कैसा है?

उत्तरः किसी के इन्तिक़ाल के बाद तदफीन में जल्दी करना चाहिये, रिश्तेदारों के इन्तिज़ार में ज़्यादा देर तक मय्यत को रोके रखना पसन्दीदा नहीं है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मय्यत की तदफ़ीन में ताख़ीर करने को पसन्द नहीं फ़रमाया है, हज़रत अली रजि0 की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अली! तीन चीज़ों में ताख़ीर न करना कि जब नमाज़ का वक़्त हो जाये, जनाज़ा जब आ जाये और निकाह जब लड़की के लिये मुनासिब रिश्ता आ जाये।

प्रश्नः शौहर के इन्तिक़ाल के बाद बीवी का उसके चेहरे को देखना या जिस्म को हाथ लगाना, इसी तरह बीवी के इन्तिक़ाल के बाद शौहर का उसके चेहरे को देखना या उसके जिस्म को हाथ लगाना दुरूस्त है या नहीं?

उत्तरः बीवी के लिये शौहर के इन्तिक़ाल के बाद उसको देखना और हाथ लगाना

जाइज़ है और अगर ज़रूरत हो तो ग़ुस्ल देने की भी इजाज़त है क्योंकि शौहर के इन्तिक़ाल के बाद जब तक इद्दते वफात गुज़र न जाये एक हद तक वह उसके निकाह में रहती है, इसलिये उसके लिये देखने, छूने और बवक़्ते ज़रूरत ग़ुस्ल देने की इजाज़त है, लेकिन शौहर के लिये बीवी के इन्तिक़ाल के बाद उसको ग़ुस्ल देना और छूना जाइज़ नहीं है, क्योंकि मरने के बाद वह एक अजनबी औरत के हुक्म में हो जाती है, अलबत्ता चेहरा देखने की इजाज़त है। "शौहर को फौत शुदह बीवी को ग़ुस्ल देने और छूने से रोक दिया जाये, लेकिन असह क़ौल के मुताबिक देखने से मना नहीं किया जायेगा। (दुर्रुल मुख़्तार अ़ला रद्दुल मुहतार 1/668)

प्रश्नः कफ़न पर कलम–ए–तय्यबा लिखना कैसा है? क्या हदीस में इसकी कोई फज़ीलत आई है? क्या यह मना तो नहीं है?

उत्तरः क़फन पर कलम–ए–तय्यबा लिखना किसी हदीस से साबित नहीं है, फुकहा ने कफन पर उसको लिखने से मना किया है, क्योंकि इसमें कलम–ए–तय्यबा की बेहुरमती होती है, बसा औकात नअ़श फूल और फट जाती है जिससे कफन नापाक हो जाता है, इससे परहेज़ करना चाहिये।

प्रश्नः क्या मुर्दों को सफेद के अलावा कोई रंगीन क़फन दिया जा सकता है?

उत्तरः मुर्दों को सफेद कपड़े का कफ़न देना अफ़ज़ल है, एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः अल्लाह तआ़ला के नज़दीक सबसे पसंदीदा कपड़ा सफेद कपड़ा है, जो लोग ज़िन्दा हैं वह सफेद कपड़े को अपना लिबास बनायें और मुर्दों को ऐसे ही कपड़े में कफ़न दिया जाये। हदीस से मालूम हुआ कि रंगीन कपड़ों के बजाये सफेद कपड़ों में कफ़न दिया जाये।

प्रश्नः अगर किसी बुज़ुर्ग आलिमे दीन का इन्तिक़ाल हो जिन की ख़िदमात से लोग मुतअस्सिर हों, मर्दों, औरतों दोनों में यकसां क़बूलियत हो तो क्या अक़ीदतमंद औरतें उनकी मय्यत का दीदार कर सकती हैं?

उत्तरः मय्यत का आमतौर पर चेहरा ही दिखाया जाता है, इसलिये अक़ीदतमंद औरतों के लिये अपने शैख़ के दीदार की गुंजाइश हो सकती है जैसा कि ज़िन्दगी में अगर फित्ना का अन्देशा न हो तो देखने की इजाज़त होती है, इसी तरह मौत के बाद भी, लेकिन बेहतर यही है कि ग़ैर मेहरम औरतों को दीदार से बचाया जाये।

प्रश्नः हामला औरत के इन्तिक़ाल पर पता चले कि बच्चा पेट में ज़िन्दा है तो क्या पेट चाक करके बच्चे को निकालने की इजाज़त है?

उत्तरः मुर्दे का एहतिराम वाजिब है और ज़िन्दे की हिफ़ाज़त उससे ज़्यादा अहम है, इसलिये इस सूरत में मुर्दा औरत के पेट से ऑप्रेशन के ज़रीये बच्चा निकाल लिया जायेगा। अल्लामा इब्ने हुमाम रह0 ने फ़त्हुलक़दीर में सराहतन यह बयान किया है कि पेट चाक करके बच्चा निकाल लिया जायेगा।

प्रश्नः क्या ग़ैर मुस्लिमों की मौत पर उनके रिश्तेदारों से

तअज़ियत की जा सकती है?

उत्तरः इस्लाम इन्सानी बरादरी के दरमियान हमदर्दी और रवादारी का दर्स देता है और एक दूसरे से अच्छे अख़्लाक का मुज़ाहिरा करने की तलकीन करता है, इसलिए इस हमदर्दी, रवादारी और हुस्ने अख़्लाक़ की बिना पर ग़ैर मुस्लिमों की मौत पर ताज़ियत की इजाज़त है।

❖❖❖

नजात व कामयाबी.....

नोटः हर नबी के ज़माने के लोग अपने नबी की इताअ़त कर के ही नजात पा सके हैं, आखिरी नबी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, अब दुनिया का कोई शख़्स हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैरवी के बिना नजात नहीं पा सकता। याद रखना चाहिए कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बाद कियामत तक कोई नया नबी न आएगा, कादियानियों का बातिल अक़ीदा इसके ख़िलाफ़ है। उनसे होशियार रहना चाहिए। ❑❑

जगनायक .....

हज़रत साद बिन मआज़ का इम्तिहान-

बनू कुरैज़ा ने दरख़्वास्त पेश की कि हज़रत साद बिन मआज़ रज़ि0 को हमारे मामले में हकम (निर्णायक) बना दिया जाये, वह जो फैसला करें हमें मंजूर है[1]।

जाहिली दौर में बनू कुरैज़ा के साद बिन मआज़ रज़ि0 से तअल्लुकात रहे थे, उसी की बुनियाद पर वह उनसे अपने हक में उम्मीद रखते थे कि रिआयत से काम लेंगे, क्योंकि यहूद की शरीअत में दग़ाबाज़ी की सज़ा में सख़्ती थी कि जंगजू को कत्ल कर दिया जाये, इसलिए बनू कुरैज़ा साद बिन मआज़ को हुक्म तजवीज़ किया कि रिआयत कर देंगे, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बनू कुरैज़ा की यह बात मान ली, हज़रत साद बिन मआज़ ने हकम होने के बाद यहूदी शरीअत के मुताबिक ही फैसला दिया और कहा : मैं यह फैसला करता हूँ कि उनके बच्चे और औरतें गुलाम की हैसियत से बाकी रखे जायें, बाकी उनके मर्द खत्म कर दिये जायें, उनका माल तक्सीम कर लिया जाये। बनू कुरैज़ा का जो जुर्म था उनकी मज़हबी किताब तौरैत में इस तरह के जुर्म की यही सज़ा लिखी थी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुमने अल्लाह के हुक्म के मुताबिक फैसला किया है क्योंकि यह फैसला बनी इस्राईल की शरीअत के जंगी क़वानीन के मुताबिक था। लिहाज़ा उसी के मुताबिक अमल दरामद किया गया और इसी तरह बनू कुरैज़ा की शरारत से बचाव का इन्ज़िाम हो गया। हज़रत साद बिन मआज़ इस फैसले के वक्त बीमार थे, और बीमारी सख़्त थी जिससे वह बच न सके, और इन्तिकाल कर गये, उनके इन्किाल को मुसलमानों का एक बड़ा खसारा समझा गया और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अल्लाह के नज़दीक उनकी मकबूलियत की खबर दी।

---

1. सीरत इब्ने हिशाम 2/239

❖❖❖

प्रिय पाठकों की सेवा में

अल्लाह का शुक्र है कि "सच्चा राही" बारहवें वर्ष में है, इसके एक परचे की कीमत और सालाना चन्दा दोनों ही शुरु से लागत से कम रखे गये थे, इसका घाटा नदवा पूरा करता रहा है अब महंगाई के सबब घाटा बहुत ज़्यादा हो रहा है, इसलिए मई सन् 2013 के अंक से वार्षिक चन्दा ₹ 150 और एक परचे की कीमत ₹ 15 की जा रही है, अगरचि इससे भी पूरा घाटा कवर न होगा लेकिन काफी मदद मिल जाएगी।

इस इज़ाफे से हमारे पाठकों पर कुछ बोझ ज़रूर बढ़ेगा, हम उनसे अनुरोध करते हैं कि वह इसे सहन कर के अपने सच्चा राही के प्रकाशन में सहयोग दें। साथ ही जिन पाठकों के जिम्मे चन्दा बाकी है अपना चन्दा भेजने की कृपा करें।

हम अपने प्रिय पाठकों से यह भी दरख़्वास्त करते हैं कि अगर उनके नज़दीक हिन्दी भाषी भाइयों में इसका पढ़ा जाना मुफ़ीद (लाभ दायक) है तो इसके खरीदार बढ़ाने में सहयोग दें साथ ही हमारे पाठक अपने कारोबारी इश्तिहारात (विज्ञापन) सच्चा राही में दे कर उसका सहयोग करें, हम अपने लेखकों तथा पाठकों के परामर्शों का स्वागत करेंगे, प्रिय पाठक अपनी शिकायत अवश्य लिखें ताकि हम उनको दूर करने की कोशिश करें। ❑❑

दुआ-ए-मग़फ़िरत

सच्चा राही के एक सच्चे पाठक और उसके प्रसारण में उल्लेखनीय भाग लेने वाले आगरा नगर के हाजी अमीर अहमद साहब की वालिदा का 02.02.2013 को इन्तिक़ाल हो गया, "इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन" इदारा हाजी साहब के ग़म में बराबर का शरीक है और मरहूमा के मुतअल्लिक़ीन के लिए सब्र और मरहूमा के लिए मग़फ़िरत की दुआ करता है तथा पाठकों से अनुरोध करता है कि वह मरहूमा के लिए मग़फ़िरत की दुआ करें। ❑❑❑❑

ईमान क्या है?

–शैख़ अब्दुल मजीद ज़ंदानी

–अनुवादः जुबैर अहमद नदवी

नियम 2– बनी हुई वस्तु पर विचार करने से बनाने वाले के कुछ गुणों का बोध होता है–

कोई वस्तु यदि हमारे सामने बनी हुई रूप में रखी हो तो उसका प्रत्येक भाग इस बात का प्रमाण है कि बनाने वाला इसकी क्षमता रखता है। इसलिए कि यह कैसे हो सकता है कि बनाने वाला सक्षम न हो अथवा बनाने का गुण उसमें नहीं हो और वह इसको अस्तित्व प्रदान करे, यह असम्भव है।

जैसे लकड़ी से बना हुआ कोई दरवाज़ा है जिसके बनाने में विशेष ध्यान दिया गया है, देखने से ही उसकी मजबूती का बोध होता है। अतः अवश्य ही यह इस बात का प्रमाण देता है कि जिसने इसको बनाया उसके लिए लकड़ी प्राप्त करना सरल था। काट कर उसे सुन्दर रूप प्रदान करने में वह सक्षम था। वह चाहता तो लकड़ी को चिकना कर सकता था, उसके पास उपकरण थे। दरवाज़े के टुकड़ों को उपकरणों द्वारा फिट करने में पूर्ण रूप से सक्षम था। किवाड़ों की कलाकारी के सम्बन्ध में वह उपयुक्त ज्ञान रखता था, तभी तो उसने इतना सुन्दर व ठोस दरवाज़ा बनाया। फिर यदि इस दरवाज़े के बीच में जहाँ ताला लगता है छेद किया हुआ है तो यह इस बात का प्रमाण है कि बनाने वाला इस प्रकार पूरी बारीकी के साथ छेद करने में सक्षम था तथा इस विषय में विशेषज्ञ था।

यही बात हर बनाई हुई वस्तु में देख लीजिए। आपको बनाने वाले की क्षमता, विशेषज्ञता और इन जैसे गुणों का न केवल आभास होगा बल्कि विश्वास भी हो जाएगा। इसलिए कि कदापि ऐसा नहीं हो सकता है कि कोई गुण बनी हुई वस्तु में पाया जाये और बनाने वाला उसमें अक्षम हो अथवा कोई ऐसी बात बनाने वाल में न हो जो उसे उसको बनाने में कुशलता से बनाने में पूर्ण शक्ति प्रदान कर रही हो। यह समझ में आने वाली बात नहीं है।

इसी प्रकार प्रत्येक बनी हुई वस्तु पर यदि आप विचार करें तो इसके बनाने वाले के गुणों का आभास होना स्वाभाविक है। यहीं से यह ज्ञात हुआ कि सृष्टि में विचार व मंथन से सृजनहार के गुणों की पहचान होती है। पवित्र कुर्आन कहता है:–

अनुवादः आकाशों व धरती में ईमान वालों के लिए बहुत से प्रमाण हैं और स्वयं तुम्हारे और उन प्राणियों की उत्पत्ति में जिनको विस्तृत कर रखा है, प्रमाण हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास करते हैं तथा एक के पश्चात एक रात्रि व दिन के आने–जाने में और उस जीविका में जिसको अल्लाह ने आकाश से अवतरित किया, फिर उससे धरती को सूखने के पश्चात उसे हरा–भरा

किया और हवाओं के बदलने में प्रमाण हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं, यह अल्लाह की आयतें हैं जो ठीक ढ़ंग से हम आपको पढ़ कर सुनाते हैं तो फिर अल्लाह और उसके प्रमाणों के पश्चात और कौन सी बात पर यह लोग इसी प्रकार से ईमान (आस्था) लाएंगे?

(सूरः अल्–जासियह 3–6)

थोड़ी देर के लिए सृष्टि पर विचार करने में परिणाम स्वरूप अल्लाह के चिन्हों को देख कर इसके कुछ गुणों की पहचान होगी।

अनुवादः तथा आप कह दीजिए कि तुम देखो तो कौन–कौन वस्तुएं आकाश व धरती में हैं? (सूरः युनुस–101)

अनुवादः क्या उन लोगों ने आकाशों और धरती की प्रभुत्ता पर विचार नहीं किया तथा उस पर जो कुछ अल्लाह ने उत्पन्न किया है और इस बात पर कि संभव है उनका समय निकट आ चुका हो, अंततः इस कुर्आन के पश्चात किस बात पर ईमान (आस्था) लाएंगे?

(सूरः अल् आराफ़ 185)

वही एक हस्ती सदैव से है तथा सदैव रहेगी– जो भोजन हम सुबह–शाम लेते हैं, वह न सुन सकता है, न देख सकता है, वह न हिल सकता है, न बढ़ सकता है, न वह सांस ले सकता है न संभोग कर सकता है न ही सोने–जागने की योग्यता रखता है। परन्तु जब वही खाना मनुष्य के शरीर में प्रवेश करता है और नसों तथा मांस में पहुंचता है तो वही भोजन जिसमें उपरोक्त गुण नहीं थे, वह एक जीवित शरीर बन जाता है और यह गुण उसमें उत्पन्न हो जाते हैं यानि कि उसी खाने में सुनने, देखने, हिलने व बढ़ने, सांस लेने, संभोग करने व सोने–जागने की योग्यता उत्पन्न हो जाती है। लगभग यही दशा समस्त प्राणियों के खाने की है। इसी प्रकार पानी, मिट्टी और हवा के वह अंश जिनसे वनस्पति अपने लिए खाद्य प्राप्त करते हैं उनमें भी न यह बढ़ोत्तरी (अभिवृद्धि) की योग्यता है न फल देने की न सांस लेने की और न खाद्य के काम देने की, परन्तु वही अंश जब पेड़–पौधों के शरीर में प्रवेश करते हैं तो वह जीवित वनस्पति में परिवर्तित हो जाते हैं जो अपनी सुन्दरता व आकर्षण से देखने वाले को दीवाना (मंत्रगुग्ध) बना देते हैं। अतः मनुष्य हो या प्राणी अथवा वनस्पति, प्रत्येक के शरीर में प्रतिदिन क्षण–क्षण गतिशील व जीवन प्रवाह इस बात का साक्षी है कि यह सब उसी जीवन दाता सृजनहार की शक्ति की लीला है।

इस युग में मनुष्य ने बहुत परिश्रम व प्रयास करके जीवन को अस्तित्व देना चाहा, परन्तु खुली हुई असफलता के अतिरिक्त उसे कुछ भी प्राप्त न हुआ। अंततः पूरब–पश्चिम के समस्त शोधकर्ताओं ने स्वीकार कर लिया कि वे जीवन को उत्पन्न करने में अक्षम हैं, अल्लाह ने सत्य कहा हैः–

अनुवादः ऐ लोगो! एक उदाहरण दिया जाता है, इसको ध्यान पूर्वक सुनो, इसमें कोई संदेह नहीं कि जिनकी तुम लोग अल्लाह को

छोड़ कर उपासना करते हो मक्खी को तो उत्पन्न कर ही नहीं सकते यदि सब एकत्रित हो जाएं और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले जाए तो उसको उससे छुड़ा नहीं सकते, उपासक भी असमर्थ उपास्य भी असमर्थ। उन लोगों ने अल्लाह (परमेश्वर) का जैसा आदर करना चाहिए था वह नहीं किया, अल्लाह सर्वशक्तिमान व सब पर वर्चस्व रखने वाला है। (सूरः अल्–हज्ज–73–74)

हाँ–हाँ निश्चय ही यदि मक्खी कोई वस्तु उड़ा ले जाये तो समस्त मनुष्य अक्षम हैं कि वे फिर उसी परिस्थिति में अपने पास वापस लौटा लाएं। इसलिए कि उसे उठाते ही मक्खी अपना थूक उसमें डाल देती हैं और अति शीघ्र ही उसे कोई वस्तु बनाकर छोड़ती है, जिसे दोबारा प्राप्त करने से कोई लाभ न होगा।

वास्तव में जो जीवन मिला है और जीवन से परिपूर्ण जिसका लाभ साधारण किया जा रहा है। यह सब उसी पवित्र महाशक्ति की कृपा है जो सदैव थी तथा सदैव रहेगी, जिसका गुणात्मक नाम अल्–हय्यु (जीवित) अज्–दायम (हमेशा रहने वाला) है।

उस शक्ति के अलावा हर जीवन व प्रत्येक वजूद के सिर पर मौत की तलवार लटक रही है। इसको हर समय इस बात का खतरा लगा रहता है कि पता नहीं कब मृत्यु के कारण उत्पन्न हों, परन्तु वह अद्वितीय शक्ति जो कारणों का जन्मदाता है उसे कारण क्या हानि पहुंचा सकते हैं? वह तो सदैव से है और सदैव रहेगा। उसकी कभी समाप्ति नहीं है। पवित्र कुर्आन कहता है–

अनुवादः उसी की सत्ता है आकाशों में, वही जीवनदाता व मृत्युदाता है, उसी का प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण है।

(सूरः अल्–हदीद–2)

अनुवादः उस जीवित व कभी न समाप्त होने वाले पर भरोसा रखिए।

(सूरः अल्–फुर्क़ान–58)

❖❖❖

इस्लाम में उदारता.....

की पंक्तियों से स्पष्ट है। आज के विकसित दौर में भी दुश्मनों को कुचल डालने को प्रशंसनीय काम समझा जाता है, लेकिन जगत का पालनहार अल्लाह मुसलमानों को आदेश देता है कि विश्व में चाहे जो कुछ हो रहा हो, तुम कदापि ऐसा न करना कि किसी की दुश्मनी में न्याय और इन्साफ़ के रास्ते से हट जाओ, बल्कि इसके विपरीत वह कहता है– "अल्लाह तुम्हें इस बात से नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ भलाई और न्याय का व्यवहार करो जिन्होंने 'दीन' (धर्म) के मामले में तुम से जंग नहीं की है और तुम्हें तुम्हारे घरों से नहीं निकाला है। अल्लाह इन्साफ़ करने वालों को पसन्द करता है।" (कुर्आन 60:8)

"किसी गिरोह की दुश्मनी तुमको इतना उत्तेजित न कर दे कि इन्साफ़ से फिर जाओ। इन्साफ़ करो, यह ईश भक्ति व विनम्रता के अधिक अनुकूल है।"

(कुर्आन 5:8)

❑❑

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

—डॉ0 मुईद अशरफ़ नदवी

विवाह पंजीकरण के खिलाफ नहीं है बोर्ड-

आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की कार्यकारिणी बैठक में विवाह के पंजीकरण को अनिवार्य करने की सरकार की ओर से शुरु मुहिम पर भी चरचा हुई। उप महासचिव मौलाना अब्दुर्रहीम कुरैशी ने बैठक के फैसलों के बारे में बताया कि मुसलमानों में ऐसी कोई शादी होती ही नहीं जिसका दस्तावेजी सुबूत न हो। निकाहनामा मुस्लिमों की शादी का सबसे अहम् दस्तावेजी सुबूत होता है। इसलिए विवाह पंजीकरण को अनिवार्य किए जाने के मामले में मुसलमानों के निकाहनामे का समुचित दस्तावेजी सुबूत मानना उचित होगा।

बोर्ड के प्रवक्ता डॉ0 कासिम रसूल इलियास का कहना था कि बोर्ड विवाह के पंजीकरण को अनिवार्य किये जाने के खिलाफ नहीं है बल्कि इस बाबत समुचित व्यवस्था किए जाने की ज़रूरत है। उन्होंने बताया कि पश्चिम बंगाल, असम और आन्ध्र प्रदेश में निकाहनामे को पंजीकरण का दस्तावेजी सुबूत स्वीकार करने के लिए सरकारी स्तर पर काजी नियुक्त हुए हैं। बोर्ड नेतृत्व चाहता है कि ऐसी ही व्यवस्था उत्तर प्रदेश सहित देश के अन्य हिस्सों में भी लागू हो।

बैठक में उ0प्र0 सरकार द्वारा जमींदारी उन्मूलन एक्ट में संशोधन कर विवाहित लड़कियों, माँ और भाई के न होने पर बहन को भी पिता की कृषि सम्पत्ति में हिस्सेदारी दिए जाने का निर्णय होने में देरी का मुद्दा भी उठा। बोर्ड कार्यकारिण के प्रमुख सदस्य जफरयाब जीलानी ने कहा कि इस बाबत उनकी सपा सुप्रीमो मुलायम सिंह यादव और मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से बात हो चुकी है। जल्द ही इस पर राज्य मंत्रिपरिषद की बैठक में निर्णय लिये जाने का भरोसा है।

बैठक में मुसलमानों के धार्मिक मामलों में बढ़ते सरकारी अदालती दखल पर भी खासी नाराजगी जताई गई। उप महासचिव अब्दुर्रहीम कुरैशी ने तलाक से पहले मध्यस्थता की व्यवस्था और दानिया लतीफी केस के हवाले से बताया कि बोर्ड नेतृत्व चाहता है कि जिन कानूनों की वजह से दखलअंदाजी बढ़ रही है उन कानूनों को खत्म किया जाए। बाबरी मस्जिद विध्वंस के मामले में सीबीआई की रायबरेली अदालत में चल रहे मुकदमे की प्रगति पर भी बैठक में असंतोष जताया गया। बोर्ड ने केन्द्रीय गृहमंत्री से मांग की है कि वह सीबीआई को निर्देश दें कि वह अयोश्या विध्वंस के सभी चश्मदीद गवाहों को पेश करवाए और उनके पूरे बयान दर्ज हों। बैठक में संसद के आगामी सत्र में बहस के लिए पेश किए जाने वाले डायरेक्ट टैक्स कोड बिल का मुद्दा भी उठा। बोर्ड नेतृत्व ने कहा कि धार्मिक संस्थाओं और ट्रस्ट को मौजूदा आयकर कानून में जो रियायतें मिली हुई हैं, वह डायरेक्ट टैक्स कोड बिल में भी जारी रखी जाएं। ❑❑